

## Paper Peeter

Q) जीवनसावो का पर्सिक्लरण कीजिए। जीवनसाव और कार्य साथ प्राप्ति के बाबत विश्लेषण कीजिए।

Ans: जीवनसाव :

जीवनसाव एक जीवनशानिक दृष्टि है। इससानिक दृष्टि होने के कारण लालीर की अलग-अलग किया दूब कुब्बे के लिए माहौल होती है। उर्वोंज, प्रयिन, स्नेह एवं पहार के बाहर शाब्दिक का व्यावहारिक उपचार और कार्य हमसा बनाता जीवनसाव के कारण होता है। और व्यालिर जीवनसाव की शाब्दिक व्यावहारिक दृष्टि कुहते हैं।

1881 में ल्यूसिन वन्होने द्वारे पर प्रयोग किया। उर्वोंज, प्रयिन, रिंगहा-पहार इत्यादि पर माथे तुल और ताजी सादियाँ छवाता स्मारेदा बही किया गया। तुस कारण द्वारे के शब्दों की पहचान योग्य नहीं हैं।

1906 में होपकिल्स द्वारा शाब्दिक ने उर्वोंज, प्रयिन, रिंगहा-पहार इत्यादि असिद्धियुक्त शेसा कुनिला मां भी धर्तु दृष्टिकोण लिए आवश्यक हैं। ये रिंगहा किया।

उँ दुखङ्कासान और उक वन्होने वी नेप के जीवनसाव की खोज की। 1912 में मॉडॉमल और डेविस वन्होने तिविदा-प्रयोग करके जीवनसाव की खोज की।

प्रत्यक्षीय यह प्रयोग यह ग्रन्ति बाबू के आया है। इसका अर्थ जीवन में अपिकालकरण शेसा होता है। प्रत्यक्षीय का कार्य शाब्दिक पहचान डेविस आवश्यक होता है।

जीवनसाव की खोज दीने के पहले

उक्ती हमला छहदिन कम पर भी रोग होते हैं तबके  
उक्ती हमला निहितम् की पासी रही। तनियों पर  
प्रयोग करके वेविट प्रशिक्षण किया पासा है।  
उसका माप आंपराटीय थुनिट से किया T.V.  
पासा है। जीवनसाधन 'आ' और 'S' T.V.  
इस माप से गिरा पासा है। परंतु अभी  
यह माप माइक्रोग्राम में गिरी पासी है।

$1 \text{ mg} = 100 \text{ माइक्रोग्राम}$ )

जीवनसाधन 'आ' (रहिवाँग) :-

जीवनसाधन 'आ' की विवरणीय अवधि छह दिन है। 1913 में मेडेल ऑफ़  
ऑस्मनिन बहुतों भवित्वों में विशिष्ट घटक होता  
है। जिसका कुरकर्णी द्वारा होने वाली छहदिन योग्य गति  
से होता है। वाह में क्षेत्र विशिष्ट दृष्टि जीवनसाधन  
अंतर्गत स्थानों में होता है।

जीवनसाधन 'आ' के गुणधर्म :- कार्य :-

- 1) शरीर की योग्य छहदिन ते लिए आवश्यक शरीर  
स्तरस्य असम रखने ते लिए आवश्यक।
- 2) वाल्यतरसा ये जीवनसाधन 'आ' आवश्यक होता है।  
क्षाकण विकास की गति ऐसे होती है।
- 3) जीवनसाधन 'आ' तथा नुलायम एकत्र ते लिए  
आवश्यक होता है।
- 4) शरीर ते अंदर त वाहक ते आवश्यक ते क-ठक्कर  
ते लिए आवश्यक होता है। आंखें, शरीरमार्ग,  
थक्कर, मुश्पिंड, घननमार्ग इत्यदि।
- 5) दोस और हड्डियों ते लिए कार्य करते हैं।  
हड्डियों ते विकास ते लिए महत्व करता है।
- 6) आंखों का स्तरस्य हितरसामन्य कार्यम

रखने के लिए आवश्यक है।

म) मांस प्रकाश में सामान्य फट्टिल रहने के लिए  
पीपुलसाइप और माहनप्रूफ शर्प करता है।  
ग) ऑचो के बाग पीपुलसाइप और निर्भव है।  
घ) ऑचो के फट्टिलपटल में दो कुंस होते हैं। दंडाकुमि  
पेक्षी और शंखताकुमि यह पेक्षी के लाला कंग  
का रान होता है। दंडाकुमि पेक्षी अमे होडोपिंक्स  
बाम का पश्चर्य होता है। यह पश्चर्य पीपुलसाइप और  
ऑर प्रयिन के संयोग से मेयार होते हैं। ऑचो  
के मज्जा पटल कुम्भ मार्ग है। होडोपिंक्स प्रकाश  
रोधित करता है। ऑर होडोपिंक्स काबीपुलसाइप  
और ऑर प्रयिन उल्का होता है। केटीनीन ऑर  
प्रयिन कुछ मास में बांयोग होता है। ऑर  
किंवद्दि से होडोपिंक्स मेयार होते हैं। यह चक्क गार  
दार वक्क रहता है। ठक्कर के रेलीनीन थोड़े प्रमाण  
में बढ़ते होते हैं। उसके निर्भीसी के लिए  
पीपुलसाइप की आवश्यकता होती है।

पीपुलसाइप और उपर्युक्ती के कारण :-

प्राणीज पश्चर्य में वितामिन A का प्रमाण  
कम होता है। उत्तर :- मधुरेत्र, छुप, वीष,  
मलाई, चुक्क इत्यर चष्टुम्, अंडे, मधुलियों का  
मिल। वनकपासि पश्चर्य में हरी झटियर्यों, बाघर,  
पर्व, आम, टमाटर, कुम्ह, परसागोभी।  
पश्चर्य का भूमि पीपुलसाइप हो :-

प्राणीज पश्चर्य में ग्राम

मधुलियों का तेल 2,6000 से 10,000 हजार

कुड़लीर ऑर्डल 2,10,000 से 1,10,000

शार्क मधुली का तेल 3,000 से 16 हजार

थक्कुम उतेपी  $\rightarrow$  6000 से 10,000  
 मध्यस्थन  $\rightarrow$  720 से 1200  
 छप (धी)  $\rightarrow$  600 से 700  
 अंड और पिला गल्क  $\rightarrow$  600 से 800  
 झरा अंडा  $\rightarrow$  800 से 200

~~2) अब इन संवेदनों की परिभाषा लिखकर अब इन संवेदनों के तीन पद्धतियों का बर्णन करो।~~  
**Ans:-** अब इन संवेदनों की परिभाषा :- शोषणाल में उत्पन्न व्यापक में कंग में पोषणसत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन न होगा। इसके लिए आहार, उत्तरासा वासावन के सुखमजीवन क्षेत्र विशेषित कुरुक्षेत्र शोषणाल में लिए जाने पर या सुखाहास मरणिदिस कुल लिए जाने पर या संवेदनों का अवना राने अब इन संवेदनों हैं।

अब इन संवेदनों की प्रमुख पद्धतियाँ :-  
 जीपांडुओं का जाता कुरुक्षेत्र अन्नभरण :-  
 पक्षांडु, उत्तरासा, टेना, ऐगांडु, विशेषित उत्तर जिकरी का उपयोग करके

जीपांडुओं की दृष्टि कीकालक अब इन संवेदनों का अनुकूली, खमीक जीपांडु फलकी दृष्टि कीकालक अब इन संवेदनों का अवना। हव्यमे गलाना, किडींग को प्रमाण में यंत्रिताक्षु का उपयोग करना वा यदि का समावेश होता है।

**3) अब इन संवेदनों की धरचूली पद्धतियाँ :-**

पदार्थ पक्षात्कर या सुखाहम करना :-  
इनिंग कोणते ने हम पदार्थी खाने से है  
लक्ष्य के वह पदार्थ घुरवाता है जो भै मध्यम होती है।  
ऐसा पदार्थ पक्षे में सुलभ और अंगुली का प्रार्थना  
कुम होने से आशोऽय ते निः सुखाहिस सिद्ध होते हैं।  
तेल और मसालो का उपयोग :-

कुरियों संखिस करना ही भै मसाले  
का उपयोग किया जाता है।

हुड़, तिखट, कलमी, घबीरा, गतधीरी  
इ आकृत्यु तेल ऊर्ड भी विकाश होने पर वह  
चीजाओं को तेल प्रसिद्धिः करते हैं। उसमें  
अंगुओं का तर्षेश बही होता। ऐसी पहचानी से  
खाद्यानन्द संखिस होता है।

श्वासपदार्थ के पानी का घूमाण कुरुते-  
हृष्मे तमुर कप से सुखाना यह पहचानी  
आती है।

सुखप्रियकरा ने सुखाना :-

यह परंपरागम और आण भी हृष्मे  
पहचानी है। अबन, माझी और साडियों ते हुक्ते,  
आठ ते हुक्ते, भोड़ी - याज, पाले ती साटिप्परा-  
आम ते हुक्ते, सुखी मध्यतियों, पापुड, कुकड़ी ऐसे  
कहन से खाद्यानन्द कुर्चि ती धूप मे सुखार पाते  
हैं। कव्यसे वह पदार्थ दीर्घकाल हिलते हैं।

छेष :-

हम सुखप्रियकरा वर नियंत्रण बही रुद्र घुस्ते। उसमें  
वाताप्ति, का अंद्राज सुखाना। ये संवक्ता पहचानी  
उपयोग मे लाई जाती है।

खाद्यानन्द पर छुल जेठती है। उसमें खाद्यानन्द की

स्फुरणा यह बात ह्यान मे लेना आवश्यक है।  
मध्यालियाँ इस पद्धति से सुखाते हैं।

उ) दृष्टि पद्धति के द्वारा ह्यान मे लेने का ताजा-  
परिस्थिती मे सुरक्षिता का मे सुखाना यह पद्धति-  
की उत्तमी है ऐसा तुह भक्ति मे है।  
बाजु ज्ञे सुखाना :-

विक्रिएल धूकाव की लड़कियों की  
जाति करके उनपर पद्धरि राख की उड़ाना ज्ञे  
सुखाते हैं। पद्धरि घब राख का विक्रिएल गांधी आमा  
है। मांस , मांसली इस पद्धति से सुखाते हैं।  
आपकुल कहा जी मे धबो मे जाना पद्धति  
की जाति पद्धरि हिकुने के लिए कीज ता उपयोग  
किया जाता है। पद्धरि रखने के लिए मयादिल  
अंतर पर कठजे होते हैं। जगह होती है तुल,  
साढ़ीयों , दुध , मांस वायदि पद्धरि ही  
की सहायता से हिकार जाते हैं।

गमलो का उपयोग जबके पद्धरि हिकु ज्ञाते हैं  
वक्तीज्ञेतर सभी वही रखते हैं जानु  
रेसे ज्ञान धूमुख फूप के छुपकाने मे हो गमलो  
का उपयोग तुव पक्का है। मिहती के हो गमलो लेने  
नीचे का गमला पानी से भरते हैं। उक्से किं  
वेठे ऐसा इस सह गमला उसमे रखते हैं।  
कव्यमे अंदर का गमला जीवा रहता है। इसमे  
अंदर का गमला रहता है। इसमे भाजी और  
कलरखने चहिर। जगमले मे गलिला पन रहता  
है। इसमे भाजी और कुल कुछ हिनो जबु अच्छी  
रिचाती मे रख जाते हैं।

व्यापारी पदहारी (सुखाना)  
कृषि पदहारी के सुखाना :-

नम पदहारी में अलग-अलग प्रकार के इंपर्स होते हैं पदार्थ ब्लडी और मृग जैसा सुखाना है। वर्णोंके सापमान, और आहुति पर नियंत्रण रख सकते हैं। सुप, पापड़, उच्च पापड़, सरबग के पापड़, अंडे का पापड़ इत्यादि के लिए इन पदहारी का उपयोग किया जाता है।

केस कर्के सुखाना :-

इन पदार्थ डालकर कस्तुकी केस करके पदार्थ की आहुति कम की जाती है और वाह में सुखाया जाता है। नम पदहारी के सुखास गम पदार्थ की मुकुली उद्याह इनकी होती है।

फवारा उठाकर सुखाना :-

सुखाने का पदार्थ गरम हवा में फैले के जैसा उड़ाया जाता है। इन पदार्थ का रूपांतर पापड़ में ही जाता है। इसके बाहर पह पापड़ इकुहना किया जाता है।

धूमिय कुरना :-

अनुष्ठीय की इच्छिया बही होती। धूड़ने की किया भी बही होती। प्रक्रियों की किया भही होती। कुल व्यष्टियां, मास, मधुली, अंडे उत्तराखाना भी इस पदहारी के हिकायां जाता है।

7. जी खाद्यपदार्थ इस पदहारी के हिकाना है

उक्तांकी परिपत्रपत्र और विवाह संस्कार के लिए अस्तु जो देखभाल करना चाहिए।

३) व्यवस्था के संचयित देखभाल उक्त।

४) टोमैंटो और सॉलेइ के लिए उपयोग में आने वाली बाजीयों की किसी भी व्यवस्था की नहीं हो सकती। ये बाजीयों जरूर लोगों की व्यवस्था देखभाल न करने पर हानिकारक परिपर्णन होते हैं।

५)  $80^{\circ}\text{C}$  से कुम तापमान पर कुले का बढ़ना बदलता है। कुरु पार तल की कंकड़ी निकोहु जागि कुम होती है कलो का बढ़ना बदलने के लिए वाष्पकुर के घोल में डालने पर अस्त्रावीकृत अम्ल का उपयोग करते हैं कॉला या इस्का निवारि करते हैं।

६) सिलोइन शैलियों के पर आहुता कोहु शैलियों का उपयोग करते हैं।

७) खाद्यपदार्थ का अन्नमुख्य रिकार्ड के लिए  $0^{\circ}\text{C}$  पर संचयित करते हैं। इसमें अन्नघतक के मान से जीवनसाधन  $8^{\circ}$  का अद्वितीय प्रमाण में बाहर होता है। ऐसे का रक्त  $32^{\circ}\text{C}$  पर संचयित किया जा सकता है। जीवनसाधन  $8^{\circ}$  का बाहर होता है।

उ) अगर से पदार्थ कीजर के निकाल का बहुम देव  
तक पैसे ही रख देने पर अणुओं की पूँछिं और  
विभाषन होता है और सुंगति और स्पाह मे  
परिपति होता है इसलिए से पदार्थ जिसनी  
खली कर्मशाव हे उपयोग मे लानी चाहिए।

इ) जिसने कुल मे किटाणुओं का प्रबोच होने पर  
जिपीन के शाने की विधि करने के कारण वह कुल  
पहले के जैसा नहीं रहता।

उ) जिसने उथाहा दिन हंडी से रखा था है तबा ही  
वाहर निकालने पर वह खली रहता है।

५) हंडी अणुओं की पूँछिं बहुम बुम गति के होती है  
जोग उपन छवने पाले अणुओं की पूँछिं १०° तुँस  
बुम लापनान पर नहीं होती परन्तु बहुम लापनान पर  
अनेक महिने वी विश्व रह भकता है। इसलिए  
किंच हयान देकर पदार्थ रखना चाहिए।

६) कुट्टे के कारण और लक्षण वालों । कुट्टे के  
रूपी त्रिलिंग इतिहासीय आहरामलिङ्गांचार करी।

Ans:- मलदहरण या कुट्टे मे मल का हे जाता  
हे और वह कुठिनासा से त कटेप्रवृद्धि शिक्तिसा है  
बुझी बुझी से युक्त की त्वेतिमध्य बिलली के इस  
विश्वाने दिखाई देता है। कुट्टे के कारण बहुम रहे हैं।

७) बोच की अनियमित आदम - अचिषुंशा दर्द  
मे उपन कुट्टे का प्रभुर यही कारण होता है  
परन्तु कुछ प्रोटोप्रोतिश भी इसके कारण कुट्टे

जो मुख्य रही कावन होता है पूर्वज्ञ कुछ त्रै  
व्यापिस भी क्षयके कावन कुछ जिकार होते हैं।  
व्यापिस को नियमित कप भी प्रतिदिन खोय  
पाने की आदत अलगी चाहिए। माला-पिण्ड  
के क्षयपन से ही लालको में नियमित कप के  
लोधि पाने की आदत डालने के लिए सहिय  
प्रयान फूलने चाहिए।

२) बांसों की दीपारी में प्रेशीय क्रियाशीलता  
कुम ही चाही है। पिण्डके कावन आवश्यक  
क्रियाशीलता भी अतिकष्ट ही चाही है।

परिणामसः मल मार्ग के मल औ निरुत्तर  
सामान्य गति से स्थानान्तरिक्ष कप से नहीं हो  
पाता। इसी लिए कुड़ी आपरण गले भोज्य  
पदार्थ से सीरियसि में अवसरे के संकुचन  
में और भी अधिक सहायक होते हैं। इसलिए  
क्लोरोफिल भोजन ऐसी कुड़ी बही होने  
चाहिए। मुलायम तकार के भोज्य पदार्थ  
आहार में समिलित होने चाहिए।

३) असूलिम आहार भी कुड़ी का कारण है।  
एक्स्ट्रा ही आहार में शोटीन तक्सा  
काबन व्यक्ति अदि भोज्य भावों को  
भास्तु उचित अनुपान में होनी चाहिए।

४) घयाल मास में शूष्क-भाष्यी तक्सा  
सवा रोटार पदार्थों की आहार में  
कुमी के कारण भी कुड़ी की क्रियाशील  
शिर्धिकुल से उपयन की स्फुलता हो।

५) कुम भास में पेय पदार्थ निलंबने के  
परिणाम रूपरूप कुड़ी ही चाही है।

6) उचित मास में व्यायाम न करने पर आंखों  
की प्रशिक्षण की क्रियाशीलता में उमी उपचार  
हो जाती है। वह मल निष्कासन का कार्य  
यही प्रकार बही कर पाती।

उपचार सबाप भी उच्च का एक फारण है,  
स्थकता है। संतोगामाषु व्यायाम में अधिक भाग्यांशु  
उत्पन्न होने पर मात्र रायग की क्रिया  
कई दिन तक अवकरण हो जाती है।

8) अनियमित कष से ओष्णन करना, पर्याप्त व्यवहार  
एवं लिखाम एवं कवना तथा जलवायी का जीवन  
व्यतीत करना भी उच्च का महात्मणी फारण है।  
कष की रिक्ति में सुखार करने के  
लिए कपास्य घ्रन्धनी अद्भुती आहो जेसे लियमित  
फल से विशेष समय एवं मल रायग पर्याप्त  
आराम एवं विज्ञाम, यदि व्यवहार हो येता हो  
जेयमित कष से ब्राह्मिन व्यायाम, तारीहिव  
निर्विकार समय में ओष्णन करना, पर्याप्त मासा  
में तरल पदार्थ (6 से 8 ग्राम तारीहिव) लेना  
तथा दौलों की क्रियाशीलता की उत्पन्नित उक्त उ  
लिए पर्याप्त मास में रेशांग पदार्थ लेना ता  
नियमित करना नियम आपकर्यालय है।

जप्त है कि उच्च तु उपचार तु  
द्विट से उचित आनश्वर्य है। सामान्य आहार  
को आवोषन करने समय ध्यान देखना चाहिए  
कि आहार में उच्ची और लव्ही उच्ची माजियों और  
कलों ती दूसरी मासा सम्मिलित की जाए  
प्रदूषसे उम-स्प-उम तारीहिव ८० से ६० ग्राम  
रेशांग पदार्थ की मासा नियन्त्रित बनाए

जो रूपती है।

एक या हो सलाह के बर्तने, जिनसे कर्त्त्व का और व्याप्तियों का भवित्व हो जा सकता है आहर में इस प्राप्ति को उत्तीर्ण करने के काम में प्रयुक्त न करें। ऐसे सहित जोने पहिए, उद्देश्यों के लिए सहित सेवा, सुनिद प्राप्ति सहित समझा। इस्युड का और रसों का अध्ययन करना पहिए। कमी- कमी गोड़ की भूमि को प्रयुक्त करना पहिए। परन्तु क्षेत्र के उपशोग करने के आगे में जबवल उपकरण ही सकुती है। क्षयगिरि भूसी और योग करने समाचर इस संख्या को अपश्य द्वारा फिरिया रखना पहिए। बाहरी व्यवहारी के दृष्टि और अपनी कृति के अनुसार नीरु या विजा वीरु या धूम के रस को ठोड़ा या गर्म घबराने के लिए निरैक्षाम लेना पहिए।

जिन व्यापारों के खल में उत्क्रियम द्वारा आविषु नि-पर्व खल में क्रियम लपेत करने इकाऊप्साइड धूतिट नवाहर धीने की जी व्यों पहिए व्यों के उत्क्रियम द्वारा अधिकता के कारण भी कुछ ही जाता है। सामान्यतः लोगों में यह व्यारोग त्वयित्व है कि वासा व्याप्ति धी, मेल, जुड़प में इहिदुरुक्त होती है। परन्तु यह व्यारोग निश्चिल ही है क्योंकि ये प्रदायक कुछ बद्ध निश्चिल ही है क्योंकि ये प्रदायक कुछ बद्ध व्यापार उम करने में सहायता होती है। ये मल की चिकना व लोगों

उच्चे निकायिस करने में सहायता होती है। इसका  
वासा में उच्चाप्र उच्चारण नहीं उनकी चट्टिस।

वाच-आण्विक माल निकायिस के सहायता  
प्रश्नान करने हेतु रेशीदार पाठ्यक्रम के काम में सहायता  
प्रश्नान करने के अनिवार्य और भी में एक प्रछाब के  
प्रयोग किया जाता है। प्रश्नाके कावण व्युत्तिकृ  
लोकितकृ परिकृ, काविव डाइओवस्याई, हस्तौष्णि  
स्पृष्टिकाई, दाहशीषन, मेयेन आदि भूते निकायिस  
हेतु उपयोगी प्रश्नार्थी का उत्त्वादन होता है।  
प्राच्य की इक करने के लिए अनुवालिखित  
उपाय विशेष रूप से प्रयोग करने चाहिए -

- 1) आहर में अर्धों निकृ-म का चारण, दलिया, हरी  
ब्युषित्या व रेशीदार आण्विक, कली कुर्स सलाह  
, हमातर शहद, गेहूँका आदि का अभोरेका प्रयोग  
मापा में लगाना, चाहिए।
- 2) रख रखन्य में योडा व नियमित कप से तापिति  
भीषन करना चाहिए।
- 3) भोजन में दर्दांवितु परिकृ का अद्वितु प्रयोग  
करने से उच्च रकम हो जाता है।
- 4) बुझी-बुझी घुलाग लेसे समय बढ़ना चाहिए।  
इस बगोल की भुसी तरहाने के जीहे का  
प्रयोग करने से उत्तरलमाझरु मत-वाहिद्वरण से  
सहायता मिलती है।
- 5) तापिति प्रायः व भोजन करने के पूर्णात्मकां  
नियमित कप से रोधु धुमना उच्च छोड़कर उनमें  
में लाभार्थी होता है।
- 6) प्रायः उच्चर शार्धा धाने के इस प्रकार गिलास  
को प्रति अवश्य लीना चाहिए।

सुकु फिल की आहार पत्रिका (कुब्बे) त्रैमाही व्यक्ति

प्रभाग	वार्षिक खर्च	त्रैमाही
सुबह 7 बजे पर	कुब्बे कुब्बे पानी पाय	1 लड्डा गलोखे 1 कुप
8.30-नाश्ता	इच्छा में भिजनेवाले अंडाएँ शिविर सब्जीया डालकुर सूखी रोटी	2 1 प्लेट
सुबह 10 बजे	माउ (बीरा पापड़)	2 लड्डा
दोपहर खाना (12-30)	छंआर दाल (परेंठ) पराली सब्जी चपलाई खेड़ी कल्ली सलाद (कुम्भे 3) पातल दृष्टि धी	2 कटोरी 1 कटोरी 2 कटोरी 1 कटोरी 2 कटोरी 1 कटोरी 2 कटोरी 1 व्यवधान
दोपहर-चाय (3-30)	चाय नींद (मुँग उत्पेक्ष) केगा	2 कुप 1 कटोरी
शाम 5 बजे	जयसु	1 लड्डा
रातड़ा खाना	रिक्वेटी (मुगदानड़ी)	2 प्लेट
9 बजे	रिक्वेटी (द्विलड़ी सास) पालक की जाती सब्जी सलाद	2 कुटोरी
	रोटी / बलाई की अयता कुब्बे	2
	कड़वी	2
	केल रा रिक्वेटी	2 कटोरी

✓ कुपोषण की परिभाषा लिखकर कुपोषण के कावलों को विस्तार स्वरूप लिखो।

उत्तर - कुपोषण पह विचारी होती है जब खाया ज्याके बाला शोजन कुछ तो दीवाना उत्तर है किसी उस शोजन के मिलने वाले पोषिटक ताव शारीर की आपशशक्ति के अनुकूल वही होते। यह विपरीत रियमि ही प्रमाण भी हो सकती है (1) पोषिटक ताव आपशशक्ति से उम होते हैं। या (2) पोषिटक ताव आपशशक्ति से अधिक होते हैं।

पोषिटक लातों की अधिकता ऐसा कमी होने से शारीर के लिए सानिकारक है जब दीने परिस्थितियाँ युक्त साध होती हैं अर्थात् कुछ पोषिटक ताव अधिक कुछ उम तो वह कुपोषण कहलाता है।

1) अपुरे पोषण :- जो उस आहार से कुलरी का प्रमाण कमी प्रमाण को लेता है आहार की व्यवस्था विकल इसे कु होते हैं पोषक ताव उम प्रमाण में लेता उसी प्रकार शारीर पर उक्ताका विपरीत परिणाम होता है।

आवश्यक उपचार उम व लोकर्स्यु जैसा है प्रमाण में कुपोषण की भविष्या निर्माण होता है उसी प्रकार अन्तिम, अंतर्गत होने से आहार विषयक आवश्यक उद्देश्य होता है। कुपोषण से उन्हें आरोग्य विषयक भविष्या निर्माण होती है। उक्ताका परिणाम उसे विषय में अधिक सीधा होता है, अब वालकु उस शक्तिकु व मानसीकु विकास में वाया निर्माण होती है।

२) जीवनसामग्री की कुमी% खरा के १४ को  
अंदरा पैकी ५०% अंदर है इसके पक्ष मारपात्र  
इसी प्रकार ए क्रोड बालक यह जीवनसामग्री  
जो की अभाव के अंदर होते हैं। इसके  
पक्ष जु कालकु गर्भवती रही, उक्त में जो  
लाल बालक यह सब में जीवनसामग्री की कुमी  
होती है। जोकि यह स्थान स्थिती है। यह  
वकाराम नहीं है यह जल्दी समझा है।

३) कल्पनाय :- मासीय कालकु, गर्भवती रही,  
कुमारपक्षा के लड़कियाँ की ४५% कल्पनाय  
यह लोह के कुमी से होता है। जाति आहार  
में लोह अभाव हुआ तो बालक में कल्पनाय  
का प्रभाव बढ़ता है, यह कुपोषण से घटता  
है। माँ की गर्भवती में लोह की कुमी हुआ तो  
जन्म से बालक का जन आपश्यक्ता समांग उत्ती  
होता है। उसी प्रकार कल्पनाय यह मारपात्र की  
प्रकृत्य समझा है।

४) पेलाप्ट / लैथरियम :- दो वीमार बालक में  
शिकिक्षा के मानसीक वीमार निर्मित होता  
है। नियासनी के अभाव से पेलाप्ट वीमार  
बालक का सिर कुमने लगता है। इस वीमार में  
अस्तित्वार तुहीं में सर्व के विकार होता है।  
प बालक की शोषणतिकार शृंखला कम होती  
है। परन्तु कम होता मानसीक उत्तिता  
यह विकार दिखता है या भाग में ज्ञाती  
व मवका जो प्रकृत्य अन्न है उस खोए में

विजासीन की कमी होती है। महायस्त्रेवा में लैंयरिंग यह विमारी कमी होती है। इसमें मृत्यु की गुमी होती है। पर कुम होता है।

5) अनेक जीवनसाधन की कमी :-

जीवनसाधन यह दौरीक संपर्क के बराबर है, जीवनसाधन हड्डी, हॉम, हड्डी के माझबुली के आवश्यक होता है। जीवनसाधन के के भी असाधन से बंदरगाही, जीवनसाधन 'ज' के अभाव ऐसी होती है कि जीवनसाधन 'ड' के अभाव कुछुत्ते ऐसी गोमारी जालक में होता है।

ऐसे आहार विषय में समस्या जालक में कुपोषण का लमाण दिन पैदिन जड़ रहा है। समस्या में कुपोषण के ऊरण जोख पर उस पर उपाय योजना करना तत्त्वज्ञ व्यक्ति के तथा सरकार का परम कर्तव्य है।

3) संक्षेप में लिखो :-

- Ans - 4)
- 1) खनीरीफरण :- अबन में होने वाले कुहमधीर के कारण खनीरीफरण में भरण होती है। जैसे कि 1) बट्टार्फ पर विकल और कुहमधीर की क्रिया होता है खनीरीफरण होता है। खनीरीफरण होने से कुछ शस्त्रनिष्ठ और भौमिक में गुणवत्ता होता है।
  - 2) मिश्रण में आवन डाइऑक्साइड (CO<sub>2</sub>) तैयार होता है। इसमें मिश्रण हल्के प जालीन होता है। 3) पदाय में विशेष व्यवस्था आता है।
  - 4) विशेष प्राद य गंधा निमाण होता है।

5) पहारा पर्यन में हल्का होता है। कावड़ एवं गोदीकरण के भीगांठ के कावड़ पर्याय के इस पर्यन होता है।  
प्रदेशी :- इटली में 5 से 6 घंटे के भीगा कवर रखने के बाहे मिल्सब में पर्याप्त करना इसके साथ उस-कुकुर की क्रिया बहुत होती है। उदाहरणीय (होस), राजमार (भारत)

मियार (करना), बानखलाई मियार करना।  
आज्ञ्य मुल्य में दृष्टिः - खमीरीकरण पर्याय की B<sub>1</sub>, B<sub>2</sub>, B<sub>3</sub> इसमें प्रमाण इतना होता है कि जैसाव 'उ' हल्का है औलीकु एकीड का विभाग होता है।

5(2) अंकुरिस करना :- लिवीज शाव्य के कुम व्ये कम 8 घंटे भीगाकर रख कर कुपड़े से बांध कर रखना। हल्का है उसके अंकुर आते हैं। कुपड़े में लांघ ने उन ताद उपराज-जगह पर लाने में बेफुज लगाकर रखना। आपकुल बाजार में अनाज अंकुरिस कुबने वाले वर्षा उपलब्ध हैं कुपड़े का उपयोग ऐ कुकुरे एक ही समय में एक छड़ा ते अंकुरिस करने आते हैं।

\* होनेवाले बहल :-

- 1) ऊपर के आवरण ठीक होकर मुलायम होता है।
- 2) अंकुरिस होने के कारण अनाज ते होने वेळ अलग होते हैं।
- 3) पर्यन में सुलभ होता है।

- ५) शोष्य घटक में वृद्धिहीन होती है।  
 ६) क्षट्टार्थ का क्रपाकरण रान्किंग में होता है।  
 ७) विमिंजन प्रीवनसार की निमित्ती होती है।

टिप्पीच	अंगने तुले आकुरिस्योर उद्गमान के समान
पानी का ४ से १० दिनों तक २५ दंते ५० से ५५% ७ से ८ mg	
भास्यम लंते २४ दिनों तक १० से १२ mg	
उत्साय लंते ७२ दिनों तक १२ से १५ mg	

इसके अलावा जीवनसारण ३३ की निमित्ती होती है। उपयोग के लिए फिल का उपयोग दुर्बल प्रौद्योगिकी का बहुत बहुत है। पक्षे के बाहर खाने पर शोग लगता है। क्षेत्रों वज्रे द्वारा पर जीवनसारण के कार्यम रहता है। पराठे, पड़ा, सलाद, अंडुकिस सलाद, फिल की विद्युति का छिक्का डाल कर पीकर का रस बहुत है। काकठ रोकर में जीवनसारण के मिलता है।

- (५) विटामीन 'क' के कार्य इस प्रकार होती है।  
 उत्तर:- विटामीन 'क' के अभाव के कार्यकों को यह होता है। १८ वीं शताब्दी में कैप्टन फ्लूडन्होने विटामीन 'C' की खोज की। यसके अन्तर्गत वार्षिक वाले यो लोग होते हैं। उन्हें ताजे कुल, नाचे और अन्यथा वहाँ दिनी सबुद्धि खाने की जरूरी नहीं निलगी। उस काकठ उन लोगों की हृदयों विकास में गति से होता हुआ।

दिखाई दिया।

कुकु ने आपे कल खहते थे और  
स्कूल वाले कल दिस और अंकुविस स्कूल  
में उन लोगों को दिस गए तब बीमारी  
में स्थानांतर हुई। विटामीन की जो कुकु  
स्कूलविली अवशेषित हुआ है। अयंग  
ज्योर्स्कार्डिक्यु आमतौ अवशेषित हुआ है।

\* जीवनसाधन 'कु' के कारणः-

- 1) जीवनसाधन कु प्रैशी में सश्वतगत्वा वज्राद्धि  
ओलाघन मियाँ होता है। इस ओलाघन कु  
उत्तरां प्रैशी खगह पर निर्मित रहता है।
- 2) लौट के शोषण में माद्दा करते हैं। जीवनसाधन  
कु के कारण केवल लौट का कपान्हवंश के बच्चे  
लौट होता है।
- 3) दायरोसिन यह निकारल के पथापथ्य में मरण  
करता है।
- 4) जीवनसाधन कु के कारण जरूरी भलड़ी मरते  
हैं।
- 5) कॉस, हड्डियों, कुम्हि (टाप). प्रैशीप्रैल इनमें  
मजबुती लाने के लिए आवश्यक होता है। और  
स्कूलमें केबाग्नहिनी के लिए आवश्यक होता है।
- 6) ऐसा प्रसिकारक शक्ति बढ़ाने के लिए आवश्यक  
होता है।

प्राप्ति उत्तरांशन →

अतिला नीकु जीवनसाधन कु  
प्राप्ति का तराम स्थान माना जाता है।  
इसके असिरियन सभवाले और खत्ते पुदार्य में  
विटामीन होता है। जैसवा, कुच्छ्योआम

है के ट्रायलर, मोक्ष की अंकुरित वृद्धिशान्वय में प्रीवन पत्ता तु मियाकु होता है। मोक्ष के दृष्टि में विहारिन रूप होता है। गाय भैरव के दृष्टि में विहारिन नहीं होता है।

प्रथिन का वर्णिकवत् कार्य क्षण अवधि का?

प्रथिन का वर्णिकवत् है-

१) सामीज पदार्थ प्राप्ति के साहन नुसार :-

सामीज पदार्थ के वनक्षपत्रिय पदार्थ के प्रथिन सामीज के द्वारा प्राप्त होता है। उसे प्रामीज पदार्थ कहते हैं। उदाहरण मांस, अंडे इत्या

२) वनक्षपत्रि प्रथिन :-

वनक्षपत्रि के द्वारा जो प्रथिन प्राप्त होता है। उसे वनक्षपत्रिय प्रथिन कहते हैं। उदाहरण साधारण, कठधारन, विभिन्न गोल वीज, सोमावीन, बोगिना, खेलसा जैल।

प्रथिन का कार्यिकार्य

प्राप्ति के साधने

विश्वामित्र के

शीर्षिक  
वृद्धिशम्भ

उनुसार

प्रभावनुसार

१)

सामीज

प्रथिन

वनक्षपत्रिय

प्रथिन

१)

प्रथिन

प्रथिन

१)

प्रथिन

प्रथिन

१)

प्रथिन

प्रथिन

साधारण प्रथिन

अप्तिय प्रथिन

संमुख्य प्रथिन

## निव्याम्न के प्रमाणनुसार

### १) पूर्ण प्रयिन -

• जिस पदार्थ में निव्याम्न का प्रमाण योग्य होता है। इसीलिए उसे पूर्ण प्रयिन कहते हैं। अह प्रयिन उसमें दर्जे का होता है। ऐसिकि भूत्य योग्य होता है, और इसीलिए शब्दिकु पिकास के लिये आवश्यक माना जाता है। प्राणीज प्रयिन का अन्वय इसी पूर्ण प्रयिन में होता है। उदाहरण मांस, छोड़, डिल्डुध जै जै जै पदार्थ, मधुवर्षा, धी, दही, पनीर, फूजारी।

### २) अंशात् पूर्ण प्रयिन -

यह प्रयिन क्रमय दर्जे का प्रमाण जाता है। आवश्यक निव्याम्न उसमें केवल १-२ निव्याम्न का प्रमाण कुम होता है। इसीलिए उसे अंशात् पूर्ण प्रयिन कहते हैं। ऐसिकि भूत्य कुम होता है, और शब्दिक ओर योग्य पूर्णिमा नहीं। इसमें उनकपरिष पदार्थ का समावेश होता है। उदाहरण मादियरो, कुड्डाक्क, मूठाद्यान्य, गोल, बीज।

### ३) अवृष्टि प्रयिन -

आवश्यक निव्याम्न में से १-२ निव्याम्न का समावेश इसमें होता है। कुछ पुराये में निव्याम्न का प्रमाण कुछ भी नहीं होता है। ऐसिकि भूत्य नहीं होगा। ऐसीरीर उदाहित के लिये ही होता है। उदाहरण जमीन के नीचे तापा होनेवाले पदार्थ आलू, प्याज, गाजर, मुखी।

3) भौतिक वृत्ताधमक्षेत्र सारे :-

(१) सार्वी प्रयिन : - प्रयिन का अलपिणोक्ता होकर उत्तम  
शल मेयार होते हैं। शल गोड़ में उत्तरायन, हिमोगलोबिन में  
उलोल्युलिन।

2) उत्पक्षिम प्रयिन :-

प्रथिन पर उठाता हुए क्षिया. द्विक्षव  
क्षाणिरिव वृक्षित प्राप्त होती है। और कंसवारिस  
के द्वारा लवण्युद्ध शिया होती है। लवण के  
द्वारा अपने दुर्बल विभिन्न पदार्थ में मिलनेवाले  
प्रथिन वसमे प्राप्ति और दुर्बलता पक्ष के  
प्रथिन प्राप्त होते हैं। उक्त द्विक्षव  
पाँस किसी तोही ओषध, पौधों स, दुर्बलता  
सरक्ष के प्रथिन हैं।

3) कंप्युटर प्रयोग 3)

पूर्णिमा अवस्था : पहारी के साथ लेने पर उसका जुँगलापनीकरण होता है। उसे जुँगला पूर्णिमा कहते हैं। यह पूर्णिमा घास के बीच नहीं रहते। उस व्युक्ति जो शोरीन, काँ-कोशोरीन, हिमोशोरीन, विपोशोरीन। पूर्णिमा के लाय -

1

ଶ୍ରୀରାମକୃତ୍ୟ ପରିଚ୍ୟାତ୍ କରନ୍ତା ।

2

२) मांसपेशियों का निर्माण करना। होते वस्तु  
कु विड़ियों के लिए आवश्यक बाह्य अपर्याप्ति  
कियोंकि अवधीया, दुष्ट अपर्याप्ति, ग्रन्थि वरचा में  
पृथिवी अस्यांस आवश्यक है।

3

- 4) जहां कई पेशीयों का नियमित करना है।
- 5) एक से कुल लाल कांच में हिमोंग लोकों द्वारा करने के लिए प्राणवायु में याकूब करना; और पेशीसंघ पड़ुआने का कार्य करने के लिए हिमोंग लोकों द्वारा होता है।
- 6) पेशीयों की व्यापक्य क्रिया करने के लिए।
- 7) प्रथम भवने का कार्य करता है। इस घमा द्वारा आपश्यक होता है।
- 8) बालू, बाखुन, बालू, बालू, पेशीयों के लिए आवश्यक होता है।
- 9) बालू, प्रथिन के अधिकार में अम्ल उत्तिया उपलब्ध धमनी होता है।
- 10) नलिका विरहित गर्ती छमोन्स के लिए उपयन आपश्यक होता है।
- 11) कारीर में पसीना और कुछ कसुके उपर नशतायु उत्तिया पर उत्तियु के ताण पहना काहर कुछ लिये आपश्यक होता है।
- 12) मानसीना फ्राइम बढ़ाने के लिए कारीर भजवुना नवाने के लिए निरोगी रुक्णे के लिए उत्तियन आपश्यक होता है।
- 13) कारीर में antibodies नियार उठने के लिए प्रथिन आपश्यक होता है।
- 14) आहार में आपश्यक प्रथिन लेने के लिए उसका कपासरण रिंगड़ी, पदाय में हास्टी और पैदा वाया के लिए स्फूहिम कुचा होता है।

5) प्रयिन के कार्य के पहले कदम के अभाव से होनेवाले बीमारीया संपर्क सार लिखो ।

उत्तर - प्रयिन के कार्य

१) शब्दों की वृद्धि करना ।  
२) मासंपेशियों का निर्माण करना । जो होने वाले हों उनके विकास के लिए आवश्यक गाल अवक्षय, किंवद्दन अवक्षय, दुर्घट अवक्षय, ग्रन्थ अवक्षय में प्रयिन आवश्यक हैं।

३) पाचक क्षेत्र की निर्माण के लिये आवश्यक हैं।

४) बहुत ऊँचे पेशीयों का निर्माण करना ।

५) इसके लाल का मैट्रिकलोगिन में यार करने के लिए प्राठाग्राह्य लेयार्ड करना और पेशीसुक पक्ष्याने का कार्य करने के लिये हिमेगलोगिन आवश्यक होता है।

६) पेशीयों की व्यापार्य क्रिया करने के लिये

७) धूम भरने का कार्य करता है, इस पर दोनों आवश्यक हैं।

८) वाल, नायुन, बिल्ली, राष्ट्रवान, पेशी जैसे इनकी निर्माण के लिए आवश्यक होता है।

९) इसके साथ, अक्षय के अन्तर्गत आवश्यक धूम जैसा होता है।

१०) नालेश्वर विश्वित गृह्यों द्वारा निर्माण के लिए, प्रयिन आवश्यक होता है।

११) शरीर में पसीना और लग्ज क्षम के लिए अग्नायु शुरिया व शुरिकु के लिए एह जैसा वाहर उठता है। वह जैसा वायु मेयार करने के लिए आवश्यक है।

१२) मानसीश शक्ति बढ़ाने के लिये शरीर

- माखिक बनाने के लिए निरोगी रखने के लिए प्रयिन आवश्यक होता है।
- (3) शरीर में antibodies जैव अवयव के लिये प्रयिन आवश्यक है।
  - (4) आहार में आवश्यक प्रयिन लेने की अभाव की संस्थान, विनाश, पराये में होता है और वह एप्पल के नीचे कांटाहिस किया है।

प्रयिन के अभाव के परिणाम :-

- (1) पेशीय की फूनीनियति नहीं होती।
- (2) प्रयिन की कुमी होने से शारीरिक उदासी नहीं होती।
- (3) कार्यक्षमता कम होती है।
- (4) शारीर कमजोर होता है।
- (5) शारीर के अंतर्गत कंपीयों का कार्य तीव्र नहीं होता है।
- (6) उचित ऊर्जा व्युत्पन्न नहीं होता है। और उचित व्युत्पन्न होता है।
- (7) पाचक रस का कार्य नहीं होता है। और पाचन दुःखिकार होता है।
- (8) रक्त में लाल पेशी तुर प्रमाण कम होता है। रक्ताकार्य होता है। और व्यसनाव कम होता है। इसका जरूर तुर प्रमाण कम होता है।
- (9) दूध का निकारक शारीर कुम होती है। दूध में व्युत्पन्न आयी ही शारीरिक कार्य तीव्र नहीं होते हैं।

10) इसमें अंग्रेजी में प्रभाग कुम होता है, इसके कावठ (पेशीय) पर सुन्न आते हैं। अपनाई अंग्रेजी में पानी पाना होता है। और पेशीय, कुकुती है।

11) मासं पेशीयों की छह ही बही होती अवधि कम लगती है।

12) पार्षद वार्षिक त्रिवर्षीय कम्पोज दोनों हैं, और कसलिय आंकुशन प्रक्षेत्र योग्य नहीं और इस पार्षद उपर्यन होता है। और अम्बुडी असड़ी में चाहा है। गोकु निमित्त होती है।

13) कल्प

14) 5 वर्षों के द्वितीय वर्षों की (झुरणी) (यांत्रीओकर) व्युक्ति (मेक्सिन) होता है।

15) जीवनसाधन का वर्तिकरण अंदरके जीवनसाधन द्वारा कार्य और अभाव के परिणाम व्यष्टि करती।

उत्तर

जीवनसाधन का वर्तिकरण



सिन्धु नदी

ग्लूटो

1) जीवनसाधन अ, अ, अ 2) जीवनसाधन दु

3) जीवनसाधन इ, इ, इ, इ 4) जीवनसाधन ब

5) जीवनसाधन द्व 6) जीवनसाधन ब, ब, ब, ब

जीवनसाधन दि (D) →

इसे मुख्यतः अकोस्टु द्विवा

कहते हैं। 1919 में यी से कुछ मुद्रक्ष दिक्षा  
होता है। ऐसा समझा गया कि आवण प्राप्ति के  
आधन समान है।

पहले महायुद्ध के बाद हेस  
और चंगर कहने विषय के कुड़ालिय  
आवण दिया उसके कारण मुद्रक्ष यह दिक्षा  
दी गया।

1919 में ही मैलबोंस कहने  
के पर पृथ्वी के कुड़ालि  
तारण का मुद्रक्ष दिक्षा होता है।  
1912 में मैलबोलम इनके द्वारा दिया  
दिया। यी मैल का यीकानकार औ कु  
प्राणी स्वभाव होने पर भी उसमें  
मुद्रक्ष अपरोक्ष दिक्षा होता है।

1924 में हेस और कंटीबोंसु  
सुर्य की छिपत में मुद्रक्ष दिक्षा करने  
की क्रिया होती है। यह जारी है।

1930 में वपटीउ में शब्द करके  
उसके घीवनस्ति दी जाए दिया गया।  
घीवनस्ति दी कार्य,

जीवनस्ति दी के कारण कुलशियम और  
कास्कोरस उा शाब्द होता है। उस कार्य  
दी और हृडियो के सहित उसमें  
आपस्यु होते हैं।

2) कृष्ण के शब्दों के बायक्याय हृडियो में  
कुलशियम, कास्कोर उा प्रमाण बड़ी भाग  
हृडियो के होती है। लोत बृक्षों में  
हृडियो का प्रमाण ज्यादा होता है क्योंकि

असु के व्याय-व्याय पह हड्डी घोड़ी बाजी हैं और हड्डी रक्तग्रिम होती है। इसीलूटी हड्डियों का मुख्यिक्षण कहते हैं। assimilation of bones इसके लिए जीवनस्थान द आवश्यक होता है।

- 3) रक्त का उल्लिखियम् और ऊर्जा को बचाना व्यायाम संसुलित रखने के लिए जीवनस्थान द आवश्यक होता है।
- 4) उल्लिखियम् की व्यावरण शक्ति औप्रत्यक्ष नरीके से जीवनस्थान द पर निर्भ्रु होती है। जीवनस्थान द के परिणाम द
- 1) जीवनस्थान द आहार में अधिक होने पर न आवश्यक राकीक के बाहर मल के फैलने के लिए जाता है।
- 2) चारों दिशाएँ लगती हैं। उल्टी आवरण व्यवन तुम होता है। नीदें न लगना और बेचनी लगती है। उल्लिखियम्, ऊर्जा को बचाना औप्रत्यक्ष लगता है। आवश्यकता जीवनस्थान द वहां है। चक्रवार जाता है।
- 5) जीवनस्थान के कार्य लिखते पढ़ते में जीवनस्थान के रूप से कायम रखा जाता है इसके बारे में ध्यान करें।
- इसके जीवनस्थान के

विटामिन के अभाव से बहुती कोण होता है। 17 वीं शास्त्री में उपलब्ध हुए विटामिन द की खोज की खलपर्याप्ति नहीं की जाती है। उनको जाए फल,

जाए अदिग्यर्यों बहुम दिनों में रहने की जल्दी  
बिल्हारी। उस कारण उन लोगों की सहायि  
विकास में शामि के होता हुआ दिखाई दिया।  
कुछ जैवाज्य कल-शहरे और  
वका वाले कल दिन और अंकुरिमध्यम  
की छज दोगों की दिन जग वीभावी में  
साधारण हो। वितामीन सी के सकारी  
प्रतिपादित अपवृद्धक धनुष कहते हैं। अयग  
ओस्ट्रालिक आमत अपवृद्धक धनुष कहते हैं।  
जीवनसाधन के कार्य-

- 1) जीवनसाधन के पेशी में व्यवलगनम् बनाकर  
कोलाइन रेशम होता है। इसका कोलाइन के  
कारण पेशी घरान पर विभव वहती है।
- 2) लोह के शोषण में मद्द बढ़ते हैं। जीवनसाधन  
के कारण कुरीकु लोह का क्षमाकरण  
के व्यवस्था लोह होता है।
- 3) हायरोसिल यह चिकित्सा के पद्धतियों में  
मद्द है। करता है।
- 4) जीवनसाधन के कारण अचमन अलड़ि  
भरता है।
- 5) हाँ, इडियो, कुर्सी (ताप) पेशीपाल  
इनमें मधुमुत्ती लाने के लिए आवश्यक होता है।  
और मधुमें कुशपहिनी के लिए आवश्यक होता है।
- 6) रोग तंत्रिकाएँ शामि बनने के लिए  
आवश्यक होता है।  
पद्धति का वितामीन सी के लिए उपयोग करता है।
- 7) पक्काने के लिए योग्य पद्धति का उपयोग करता है।

- २) सद्यो पहले दी तेना बाहु मे काटना ।
- ३) उत्तरां देव मधु नहीं पकुआ।
- ४) खाने के कोडे का उपयोग बही करना ।
- ५) देव मधु भद्रजी काट के नहीं रखना ।
- ६) वेकन लौकु के पकुआ।
- ७) कृष्णसे मे शरवतांश मारने पानी के बदल होते हैं। उस कारण भद्रजी दंडे पानी मे द्वारा की घटिया।

- ८) जीवनसाधन के अभाव के परिणाम जागरूकता के आधार साधन सार्वत्रिक होना ।

Ans:- जीवनसाधन के

विटामिन-ए के अभाव से क्षुब्धि रोग होता है। १८वीं शताब्दी मे कृष्णनु कुकु इक्कीने विटामिन-‘C’ की खोज की। जब अपरिहन करनेवाले जो लोग होते हैं। उनको माझे तुम, माझे सहियाँ बहुत दिनों तक खाने के बही मिलती। उस कारण उन लोगों की सूखदाहि, विकास छंद गति से होता हुआ दिखता है। कुकु ने माझे कल खत्ते और एस वाले कल दिए और उंकरिस धान्य भी उन लोगों को दिए तब वीमाती मे ज्वाबाबद्ध हुई। विटामिन-सी को कुकुरी चरबापिती अपरोधक धूलक होते हैं। असता और कुकुपु आनंद अपरोधक धूलक होते हैं।

अभाव के परिणाम

- १) जर्खम भूलक भवते नहीं।
- २) लोट ता शीघ्रता योग्य प्रकार से होगा वही।

3) कोलाइन का प्रभाव शुम होगा।

4) कोलाइन के जूस प्रभाव के कारणी के कहाँ  
रोग होता है (क्षमता के लिए होता है) के उचित आवश्यक  
है। ऐसे और माँडी इसकी है। कुप्रबंध आवश्यक  
के के फैलने में लकड़ियां होती हैं।  
कारण चिकित्सा करने में है। आकाशवान् पर्व  
आता है। वर्षन के जूस होता है। लगातार  
देटी, असिसार होता है। घबड़े कुप्रबंध  
देटी, दूसी, के लक्षण होते बिभाग  
होता है।

वहाँ दिनों में जीवनस्थिति के  
के कमतरता होती है को जो भी कहाँ  
रोग होता है। क्षमता घबड़े सुखमें होती है।  
और घबड़े में जो रुक्न आता है। दूस  
दूरपाल है। और दिल होकर, विद्युत है।  
फिनायु कमज़ोर होती है। साथे उसकी है  
जैसे राण का प्रभाव बढ़ने पर  
जर्म में से रक्तसंप्राप्त होता है। और  
प्रकृतस्थाप उत्पाद दिन के ऊर्ध्वा रूपान्तर  
होता है।

काटना का धारणा :-

आकला, नीति जीवनस्थिति का  
प्राप्ती का उत्तम साधन माना जाता है।  
क्षमता असिसिव्यम् क्षमताले और शहरों  
परिय में वितामिन C होता है। क्षमता,  
कारण आम, इसे हमारे, मौखिकी  
विकृतियां क्षमताव्यम् में जीवनस्थिति के  
परियार होता है। माँ के इच्छ में वितामिन

से होता है। इसके द्वारा में उच्च में विनियोग  
करनी होता।

- १) कार्बोजि का कार्य उपलब्ध अवधि के परिणाम  
और प्रयोगों के बारे में लिखो।
- उत्तर - कार्बोजि का कार्य -
- १) उत्तोसा और शक्ति निभाने के लिए कार्बोजि के  
उपयोग से पहली मास होती है।
  - २) वारी का उत्तोसा मान वर्गों के लिए  
आवश्यक होती है।
  - ३) कार्बोजि की आवश्यकता इसी होने से प्रयोग  
का उपयोग उत्तोसा निभाने के लिए ज होते  
हुए कार्बोजि रूपदण्ड के लिए होता है।
  - ४) लंबोजि के कारण उत्तोसा के प्रयोग और छोड़ना  
के लिए मद्दत होती है।
  - ५) उत्तोसा में कपासरंग होने के बाद अच्छी  
में उत्तोसा निभाने का कार्य कार्बोजि के लिए  
होता है।
  - ६) ऐलटुलोजि के कारण उत्तोसा की किसी ही तरह  
से होता है।
  - ७) ऐलटुलोजि के अंतर्वर्षीय पहुँचाया जाने  
की जारी की अवस्था में ऐलटुलोजि लगाया जाता है।
  - ८) मेंडु का और मजब्बा किया कुर्कुतुलें  
के लिए ऐलटुलोजि आवश्यक होता है। और ऐलटुलोजि  
जहां कार्बोजि ही है।
  - ९) कार्बोजि के अभ्यास के परिणाम -
  - १०) ऐसी होने के कारण आसव में उच्चाहा उपयोग  
किया जाता है।

१) कार्बोफ द्वारा प्रभाग बढ़ने पर कार्बोफ अस्ट्रीयमें कम होता है। और इसके अन्त घटना का परिणाम शोध प्रकार से नहीं होता।

२) पर्याय संस्था के विकास होता है। उक्त कार्बन अपचयन होता है। प्रसिडिटी होती है। असिस्यारु होता है। अब द्वा द्वारा बढ़ता है। प्रशिक्षण के लिए कृठिनाई निर्माण होती है।

३) ज्यादा प्रभाग में चलुक्यों लेने पर एवं विद्या के लिए व्यक्ति ने यमा होता है। उक्त कार्बन मोटोपा बढ़ता है। मोटोपा बढ़ने के हाथ से और लेड ऐशर बढ़ने की संभावना होती है। कार्बोफ द्वा पर्याय व्योजना होती है।

४) कार्बोफ पर पायकु वक्त की किया होती है। चलुक्यों में कपासेंग होता है। होठी अस्ट्रीयमें अब द्वा प्रभाग में यद्वा में शोषण होता है।

५) अकृत में चलुक्यों का कपासेंग चलायकुञ्जन में होता है। और वह संशोहित किया जाता है। अपचयन के अन्त में किंवद्वा के चलायकुञ्जन का कपासेंग चलुक्यों में होता है। और वह शाकीर के ४६०ता निर्माण का कार्य करता है।

६) चलुक्यों प्रभाग ज्यादा होने पर एवं विद्या के कपासेंग में यमा होता है। यिशु त्रिपुरा सिन्हाद्य पर्वत के कपासेंग में यमा होता है।

७) सिन्हाद्यान्त के बारे में यिशु त्रिपुरा लिखकुट्टी निर्माण पर्वत का अस्ट्रीयमें चलायकुञ्जन करता है।

Ans:- वर्षत. लिकिडस, रिनोवा पहार्य + रिसर्चेल हैनोट्स  
जरीब मे आवश्यकता होती है। जीवी मे कुल  
स्थावरण होता है, कुल उत्तरी 15% से 20%  
कुली रिंगड़ पहार्य से मिलती है। इस रिनोवा  
पहार्य का उपलब्ध होने पर उत्तरी उल्लंगा मिलती  
है। प्रयिन और शारीरिक दृष्टि के अनुसार रिनोवा  
से स्थावरण कुली प्राप्त होती है। इसलिए इस  
उपलब्धता के बाहर उत्तरी है।  
रिनोवा का की परिभाषा

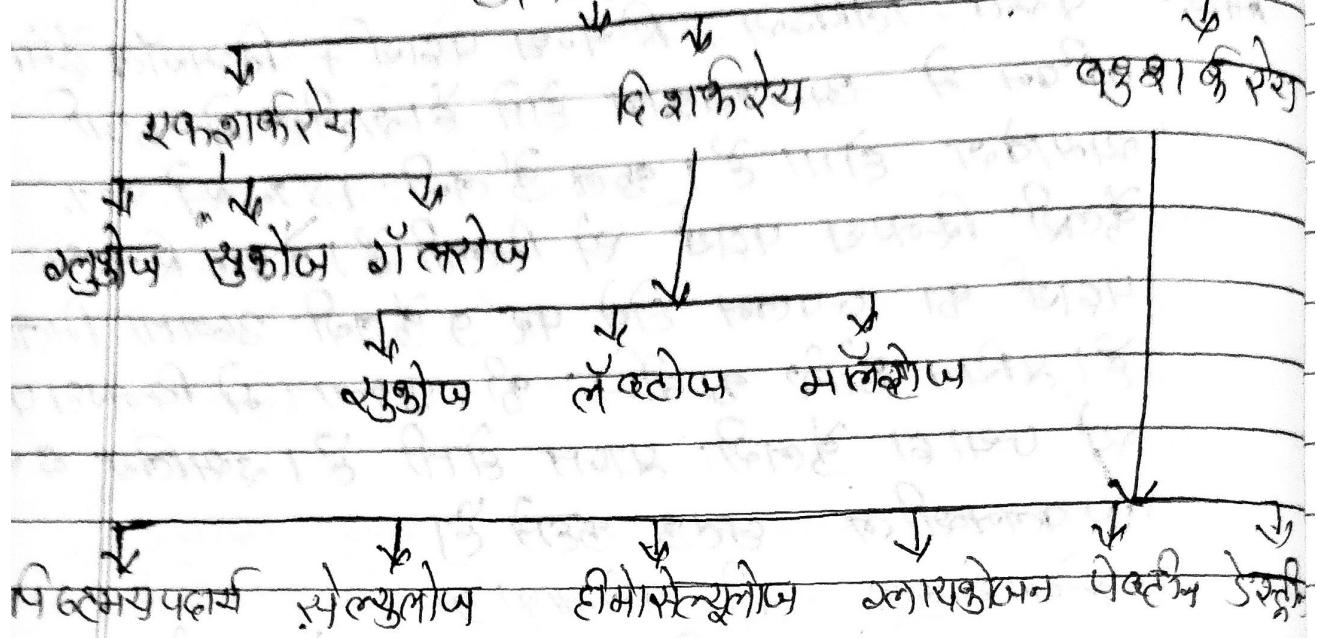
रिनोवा रिनोवा मे उत्तरी प्राप्त  
शोधित जही किया जाता है। उसे विभिन्न रिनोवा-  
ता कहते हैं।

रिनोवा- पानी मे अधुलनकील होती है।  
कुछ अपेक्षा हल्के होती है, जैसील, रुद्ध, लोचोवाम  
जैसे धुलनकील होती है। रिनोवा पहार्य का दृष्टि अवार  
धन रिनोवा उभयमे होनेवाले उत्तरी प्राप्त होता है।  
विभिन्न होती है। रिनोवा पहार्य का ग्राह, घनविद्युत  
और द्रविदवन किंवद्दु उभयमे होनेवाले रिनोवा-ता  
पर विभिन्न होती है। रिनोवा पहार्य स्थावरण द्विती  
उत्तरी पर उत्तरी वास आती है। क्य किया कु  
कुली कीती होती है। रिनोवा पहार्य मे संस्करण  
और अवरुद्धता रिनोवा-ता होती है।

Q. 11) क्वार्ट्स का वर्गीकरण करके व्यवसाय के लिए?

Ans:-

# आत्मिय का वर्गीकरण



राक्षकीय → आहे राक्षकीय का रक्त अंगु होता है। उसे रक्त राक्षकीय कुबीजि कहते हैं। यह राक्षकीय का पृथक्करण होता नही है। और उसका किसी में भी कपालर्णा नही होता है। यह राक्षकीय रक्त में भी होती है। पानी में धूलगवील होती है। इसके रक्षकीय होते हैं। आहे राक्षकीय कार्जन में 3, 4, 5, 6, 7 अंगु होते हैं। और उक्तपर से उसे बाम दिये गए हैं। यह पक्षपर से पूछे तुम होते हैं। और कार्जन डायल्फिंच अंगु प्राणवायु से पूछा होता है। पापुनु यह मुझे आपक्षयकारा नही होती है। तिसे रक्षकीय में होना है। उसी में अपारु बोषण होता है।

बलुकोप

कल और व्यक्तियों के हृपाण्डु मार्ग में द्वाव राक्षकीय होती है। छुड़, राहद इत्यादि व्यक्तियों के हृपाण्डु में द्वाव होता है। ये द्वाव कल पक्के लगाते हैं। सुकोप का प्रभाग कुम होता है। बलुकोप का प्रभाग बड़ा है। वाक्षिरिकू हृष्टि ये प्रभाग

का कानून यात्रा है। कारण की उठाए जिम्मेदारी  
के लिए क्सात्रा उपयोग होता है, मानवीय शरीर  
में 100ला. खुब मे 80-100ला., ब्राम, रसुकोज  
होता है। 80-100 वास्तव कायम वर्णन यक्षी  
होता है। दिक्षितरेय और बद्रीकर्त्तव्य त्रैपचन  
के बाद उभाका कपाहंडा रसुकोज मे होता है,  
शरीर का संथलन रसुकोज के द्वारा होता है। और  
यह कृष्ण पद्मासन से मैयार की जाती है।

उ) कुंबलोज - नेपाली का शार्किया भी कुहाने हैं। वर्षों के सुन कल के दोनों में आठ बी यासी हैं। इसी तरे न०८५ कुलोज भी कुहा प्यासा है। नेपाल का अमान ज्यादा मीठा होता है। और वे पर्वतीकरण घटनाएँ नहीं होता हैं। परन्तु उस वर्षों में कुवलोज का प्रभाग ज्यादा होता है। यह शार्किया कुलोज पराग में होती है। शहरों में कल, सद्बी, और - जैको कल पक्के बगाने हैं। यह - जैको कुवलोज का प्रभाग बड़ा है। वीहर में ३०%, ५०% कुवलोज होता है। सुखोज में पुरुष कुराण होता है। सुखोज फिलाकुरेय, कुर्बोज है।

3) बॉलेंटोप ने दुर्घटनाकृति कुहले ही दुर्घटनाकृति कु  
प्रभावित्युम् दीक्षुक शब्दिक में बॉलेंटोप सेयार है।  
है। दुष्ट और दुष्ट जी बने पदार्थ से प्राप्त होता है।

2) फिंकुरेय का वापर

दो (साथ) या रुक्षांकिते त्रैयोग  
जी दो अनु मिलकर दिशाकृति त्रैय त्रैया  
होते हैं दिशाकृति त्रैय दोने समय रुक्षांकिते  
त्रैय दो अनु त्रैयुक्त होते हैं। पानी में धुलनशील  
ही रूपटीकृत खल्ही होता है, और इष्टांत त्रैय  
होने समय रुक्ष वांकिते में केपास्ट्रॉन होना।

3) सुकोप) कुप्रतोप्य + उलुकोप = सुकोप। इनमें  
ओवर रलुकोप के विचार के सुकोप में याक  
होता है। यह शार्किवा गणना, लीट, प्राइड के  
विशेष, जैविकी के छाते साथी ओवर कलो में  
होती है। सुकोप का पर्यान होने के बाहे,  
प्रलिपिगत होता है। सुकोप का पर्यान होने के  
कुचाह प्रलिपि का कपासिंग कुप्रतोप। ओवर  
उलुकोप में होता है। सुकोप का पर्यान छोटी  
आसनी में होता है।

4) लैंबलोप) उलुकोप + गॉलैंबलोप = लैंबलोप,  
लैंबलोप को क्रांतिकरण कुहते हैं। लैंबलोप  
का प्रलिपिद्युत होकर उलुकोप ओवर गॉलैंबलोप  
में कपासिंग होता है। कुलशियम के शोषण के  
लिए लैंबलोप आवश्यक होती है, लैंबलोप की  
उपक्रियाएँ में प्रधान का पर्यान कुर्य सुलभ  
होता है। सर्वस धनियों के द्रव्य में लैंबलोप  
का प्रभाव होता है।

1) गाय के द्रव्य में 100ml = 5.5 gm लैंबलोप

2) भेंस का द्रव्य में 100ml = 5.0 gm

3) गधकी का द्रव्य में 100ml = 4.6 gm

4) गधी का द्रव्य में 100ml = 6.5 gm

5) मासा का द्रव्य में 100ml = 7.4 gm

5) मालहोप) कोम आई टुम्ह धाव्य में मेयाव होते  
हैं। ओवर रसी कारण से रसी धाव्य कार्डिवा  
कुहते हैं। उलुकोप के द्रव्य में अठु के काव्य  
मालहोप शर्तुका निमित्त होता है कोम लान

कुं किया मे इत्यर्थ वर्त वीमानी मे पिट्ठमय  
पदार्थ पर किया होकर यह शक्ति लेयाव होसी  
है। डाढ़े की मई परिस्थिति, कंटमुलु, शक्तिह  
की श्री इक्षुवा उषाध प्रभाग होला है। पर्यन्त किंवा  
मे पिट्ठमय पदार्थ और बलायिकोण एवं तात्त्विक  
और आंतीक सीन की किया होसी है। और  
उक्षुके वाद मालतेज शक्ति लेयाव होली है। पर्यन्त  
मे हज्जी होसी है। हज्जी होने के कारण रक्षा मे  
खल्ही शोषण होला है। छोटे उच्चो कुं खाने के  
पदार्थ मे मालतीय शक्ति का उपयोग होसरहै।

उ) बहुशक्तिय कार्यित - अक्षरार्थिय और दिक्षुकृतिय  
हनुषु अणु की बहुशक्तिय शक्ति लेयाव होसी है।  
अठुमावु श्री उषाध होला है। पानी मे अद्वृतनशील  
होली है। उषाध मे बुम मीठी होली है। कपटीकृष्ण  
होला नहीं है।

इ) पिट्ठमय पदार्थ - ५०० से २०० मण्डशक्तिय कुं रंथुलम  
अणु होसी है। आधार मे पिट्ठमय पदार्थ कुञ्जमारेश  
उषाध होसी है। कारण भवी वरक्षणसिध्य पदार्थ मे  
पिट्ठमय होसी है। पानी मे अद्वृतनशील है। पव  
उठोला कुं रपाका कुगासी है। और मुलायम होसी है।  
कुगासी की किया को पितेली नायसीन कुहम है।  
पिट्ठमय पदार्थ अमालीय और अमालेप्पेल्लीन  
उक्षुमि श्रावण से बना होला है। चावल, गोड़,  
उवाकी, बाजकी उक्षुमि उच्चार्थ मे होसी है। अग्नु,  
शक्तिह, येव अदि ने उक्षुवा प्रभाग उषाध  
होला है। घेये-घेये कल पकने लगासी है। उष्ममे  
मुलायम होसी है। और उक्षुवा बंग बदलला है।

कव्यकृति विपरीत मूलाधान्य कथ्ये होमे हैं। अब  
उक्यमे कार्किरा का प्रभाग होमा है। योग्य-  
प्रभाग परिपक्व होगे असमे पिछलमय पदार्थ का  
प्रभाग बढ़ता है। उक्त गोडे ता दुक्ता परिपक्व  
होने के लिए परिष्ठे पर गोडे तेयार होमे हैं।  
पिछलमय पदार्थ का पूर्णन होने के लिए यक्षे  
पहले उक्ता देवस्थान मे कपासरंग होमा  
प्रकृती है। उलाघटोजन मे कपासरंग होमा है।  
बाह मे उलुकुप मे कपासरंग होमा है। पिछलमय  
पदार्थ  $\rightarrow$  उलस्थान  $\Rightarrow$  उलाघटोजन + उलुकुप

2) क्षेत्र्युलोप - अनाप्य की सुखी, अच्छी के  
उन, कुली ता के दीदार, हिक्सा, स्थिष्याँ,  
कली क्षमे क्षेत्र्युलोप का प्रभाग अस्तित्व  
होमा है। ५०% कावीप क्षेत्र्युलोप के वरका  
मे होमा है। ठेंडे ओव गरम पानी मे आशुलन  
कील होमा है। अलग आहर मुल्य बही होमा  
पास्तु पूर्य की क्रिया होती बही है। शावीकु  
निकपयोगी पदार्थ बाहर डालने के लिए क्षेत्र्युलोप  
की मद्दत होती है। काव्य खाम करने के लिए  
मद्दत होती है।

3) हेमीक्षेत्र्युलोप - हेमीसेल्युलोप सिरु दीखो मे  
होमा है। क्षेत्र्युलोप कम करने के लिए हेमीक्षेत्र्युलोप  
की मद्दत होती है। काव्य पूर्ण करने सेल्युलोप  
का भाग होमा है।

4) उलाघटोजन - उलाघटोजन अनेक ता शावीकु मे  
पूर्ण होकुर उलुकुप के कपासरंग होमा है।  
उचालि ता उलुकुप राक्षस मे बंगत्तिस उया  
यासा है। उलाघटोजन के र-वक्तु मे यक्षमे

संग्रहित होता है। यह शब्द कुछ दो इकाई की आपकरणमुख्य होगी जब किंवद्दन से ब्लाष्टोप्सन का व्युक्तोप्स में कपासित होता है। और उन्नासा विमिति के लिए आपकरणमुख्य होती है। ब्लाष्टोप्सन प्राणियों के शब्दों में प्रयाप्त होता है। क्यस लिए उसे प्राणिय कार्यों द्वारा होते हैं।

5) पेक्टीन- गॉलॅक्टिक में निषु रक्षित के ज्याहा अचु क्यंशुक्षम होक्ते पेक्टीन में याक होता है। यिसमें भी पिण्ठमय शुद्ध पदार्थ में पेक्टीन होता है। ज्याहा के ज्याहा कलो में होता है, पेक्टीन पार्स्ट्रिक्ट होते हैं। पेक्टीन के ज्याहा के पर ज्याम, जेली कुरते पक्का काकुका का प्रभाव निश्चिर होता है। पेक्टीन का प्रभाव अद्वितीय होता है।

6) डेक्सट्रीन- पिण्ठमय पदार्थ का भालतोप्स और व्युक्तोप्स में कपासित होने से पहले उक्तो डेक्सट्रीन में कपासित होता है। डेक्सट्रीन कलो में होता है। क्षिरम् पदार्थ की में याक की जाती है। पिण्ठमय पदार्थ का अन्न डालकर डेक्सट्रीन में याक किया जाता है। पानी में धुलकरील है। उस नुक्ता पिण्ठमय पदार्थ का डेक्सट्रीन में कपासित होने पर स्पृहय पदार्थ क्षय में मिलते हैं। ब्रेड लाल भाग में डेक्सट्रीन होता है। घ्याकी की ओरी के ऊपर के पसले भाग में पावल का खला हुआ भाग पकाने कार्यादि में डेक्सट्रीन होते हैं। डेक्सट्रीन के कावण आमतीय के खंडु भरते हैं।

7) अन्न पदार्थ का पोषण का जी सुखाकर की पहली लिखक विकारी भी व्याह पहली के बाद में लिखते।

Ans:- अनेक अन्न घटक महसिस करके आक्रमण करते हैं। अनुपार पोषण सुल्तान की रूम / अधिक समाज में अंदरूनी व्यवस्था के लिए आवश्यक विद्युतों का उपयोग खाद्य पदार्थों को प्राप्त करता। यानि अन्न पोषण इसी सुव्यवस्था है।

खाद्य पदार्थ पदार्थों का बहुत है।

प्रकार परिवर्तन होता है।

1) बाह्य बदल -> गँड़, बनोपर, आकार साज।

2) अभियुक्त बदल -> व्यवस्था, भोजन वित्त विविधता बदल।

1) खरीदीकरण -> अन्न में होने वाले सुखभवित्व के कारण खरीदीकरण में मजबूत होता है। ऐसे कि 1) व्यापार पद्धति और अंतर्राष्ट्रीय संस्करणों की क्रिया होकर खरीदीकरण होता है, खरीदीकरण होने के कारण वायस्किल्स और शिक्षा में उत्तराधारी होता है। 2) नियां में वुल्फ़ डिक्सोक्साइड ( $CO_2$ ) में याद होता है। उससे नियां हल्के व खालीकाए बनता है। 3) पर्यावरण में विशेष बनावत आता है। 4) विशेष चीजों व गांठ नियां होता है। 5) पर्यावरण परम में होता है। कारण खरीदीकरण के जैविक तृप्ति उन्नां पर्यावरण के रूप पर्यावरण होता है। पर्यावरण -> फैली में 5 से 6 घंटे के अंदर 90% रखने के बाहे नियां में बढ़ी तुलना रखते हैं। 6) व्यायाम -> फैली, दोया, व्यायाम / अनुबंध नियां नियां, जानखोलाई नियां तथा तना। 7) व्यायाम में दृष्टिकोण

समर्पित करता पदार्थ में B<sub>1</sub>, B<sub>2</sub>, B<sub>3</sub> वैश्वरे समांग उत्तरव  
होता है। यीजनकाम के बहुत हैं तोलीकृ रसीदी  
का विभाग होता है।

2) मात्रा में अधिकृत कलाश, पर्फूमर्स-

इस पद्धति के पदार्थ का बिनाएत  
भवान आकार इसमें कहल होता है। पर्फूमर्स के  
पदार्थ अमर्ग होता है।

अर्थ- अधिकृत चुंची ३६०/७८ के सहायता के अन्तर्ज  
ओर डिवीज के कावर मुनज्जा याके पक्की हैं तकी के  
लाई कोडना कहते हैं। अन्तर्ज ओर डिवीज के पल  
मुन्ना जैसी जो अकुमा वह कुलते हैं वह पर्यन्त में  
हैंडे होते हैं।

पद्धति- उन्नाप व डिवीज के २ के ३ वांटे पानी में  
झगोड़े अखड़े चुंची ३६०/७८ के सहायता के पदार्थ  
मुन्ने खाते हैं, कुलाके, बताने मुख्यते बामये हैं और  
अन्तर्ज नमकु लगाकर मुख्यते हैं। इस अन्तर्ज ओर  
डिवीज के १ व २ मीनट ३६०/७८ के टीटीप्रीमींग  
प्रियाणी घटकु बहत होता है। अन्तर्ज व डिवीज  
पर्यन्त में हैंडे होते हैं।

चन, बताने, मक्का, बिराह, छान,  
मोसीचुड़े के लाई इस पद्धति में लाई कोडी है।  
ओर वह याके योग होते हैं। लाई इके भी  
छाई यासे हैं ओर अबगा अलग पदार्थ  
के उपयोग में लाई यासे हैं।

3) लायमींग- लायमींग को विशिष्ट अर्थ नहीं  
है। एक रसीद पद्धति के कुलशीलियम की रसीद  
करने के लिए चुने जूने जूने उपयोग किया जाता  
है। ये चुना की गंभीरी करने के कुलशीलियम की

पूर्णी करने के लिए चुने गी वर्षों बल तक  
 पीछा आवश्यक होता है। याने के पान में उन  
 लगाया जाता है जब तक वे पान में उपयोग  
 लीह, खीरनसार द्वारा होता है परं चुना  
 जाने पर कुल्हारियम मिलता है।  
 अर्थात् वर्षों जीतुं करीय का समावेश होता है  
 जीतुं का रस जीतानु त्रिपीवधु ता ताम तम्हा है।  
 उच्छः कनस, संकरथं जाति ते वाह उक्षी स्यमर  
 वीतुं भगाने से हवा ते संपर्क से उक्षम बहलाव  
 नहीं होता। कारण हवा ते संपर्क से आने पर  
 अन्वर्स प सकरथं वा कर्ण व्राजन होता है  
 पर जीतुं से रंग बहलाव नहीं। कुछ संरक्षण  
 क्षारीषु रसीद डाला जाता है। इसके अलावा  
 शराह में बहलाव आता है। उर्ध्वा पदार्थ ते  
 जीतानु से संरक्षण होता है।

4) मालतींग → मालतींग याने उन्नास के भिन्नोंकर  
 उसको अकुरिम करके और द्युखा कर द्युध के  
 आला में यार करवा। इसको मालतींग जूहते हैं।  
 राणी (नाघनी) मालतींग करके छोटे बच्चों के  
 लिए खीर के लिए उपयोग किया जाता है।  
 मालतींग में पोषण मुक्त्य बनाया जाता है।  
 उच्छः 100 फूल राणी में

328 त्रैलरी

7.3 प्रयोग

2.3 विवरण तथा

344 393 कुल्हारियम

17.4 39 लौह

पहली -

- 1) गेहुँ आ रागी पानी मे छिंगोकर वाद मे कपडे  
मे बिकाल लेना । उसके बाद पानी छवा निकालने  
काद धूप मे सुखाना उसके बाद भुजना और  
आल में यार करना ।
- 2) या रागी गेहुँ के अक्षरित कच्चे सूखा त  
आल में यार करना । छोटे कच्चे के लिए रुग्ण  
कच्चे ऐसे में यार किस गर्म मालट का उपयोग  
किया जाता है ।

रागी मालट का उपयोग उत्कथियम  
की कमी पिछ व्यवसी तो है ऐसे व्यवसीयों  
के लिए किया जाता । छोटे कच्चे, रुग्णवानी  
की, दुध पीलाने वाली भासा ठहरे देखकर  
रागी मालट उपयोग मे लाया जाता है ।

~~Ques 13) उन पदार्थ का समृद्धीकरण और उत्प्रेरण यानि व्या-  
वसायक अनेक - अनेक विभिन्न पदार्थ का समृद्धीकरण  
कैसे होते हैं यह लिखे ।~~

Ans:-

किसी भी पदार्थ मे नैसरिकि अवश्यक उपलब्ध  
न होने वाले पोषक घटक (एवं) अभवित करना  
यानि उन पदार्थ का समृद्धीकरण है ।  
कार्य- समृद्धि का कार्य - 1) उन पदार्थ मे  
कुछ विशिष्ट घटक डालने से उस पदार्थ का प्रेरण  
मुख्य बढ़ता है । 2) पोषक एवं उसमें उपलब्ध  
होनी है । 3) उन पदार्थ का प्रयोग और प्रेरण  
वाले के लिए बहुत होती है । उद्धः- आता अगाह  
वृक्ष उसमे इस डालने से लाभासीन यह वृक्ष अगले  
होता है । गेहुँ के सोयाबीन डालने से प्रोटीन बढ़ता है ।

उपरोक्त 1) समृद्धि के अन्न पदार्थ में भिन्नता है।  
पोषक घटक (पोषण मुल्य के लिए) है।  
2) समृद्धि के आहार व्यवस्थाओं द्वारा है। समृद्धि के द्वारा पदार्थ का पोषण दियी जाता है। साथ-साथ इन्हें बदल देता है।  
अन्नमूलदीकरण की विशेषताएँ:

- 1) जैविक रूप से कार्यम व्यवस्था। पदार्थ मुख्यतः उष्णकटी भूजना, पक्कना, कड़क बनाना, पीसना व्यवहारिक बनाना वैश्व वर्ष से बहोस लाते हैं। इस नित होते हैं। इस कमी की छापी करने के लिए कांचतूर करने की पदार्थी और ग्राहिय में सुधारणा की जाती है। उत्पादक तकिया करने में प्रयत्न लिया जाता है। पोषक घटक जैविक उपचारों के मिलते हैं, जोकि जैविक रूप से कार्यम रखा जाता है।
- 2) जैविक रूप से ज्यादा तमाङ में समृद्धिकरण। - पोषक आहार में व्यवस्थागत अविनाश के अनुभाव दोष आप्त्यकुमारों की शुग्गी होने वाले देखे पोषक आवश्यक दोष हैं। पोषक घटक की आप्त्यकुमारों व्यवस्थाविकास की अवश्यकता विद्युत, ऊर्जाविमान, विमान, हवामाल, लिंग, उम्र का वृक्षाकृति अनुभाव पोषकात्मक की आप्त्यकुमारों होती है ताकि व्यवस्थाके अनुभाव जैविक रूप से ज्यादा तमाङ में समृद्धिकरण किया जाता है।
- 3) व्यवस्थी व्यवस्था के लिए समृद्धिकरण लोगों के आप्त्यकुमारों में व्यवस्थी व्यवस्थे पहले अन्नमिति में वेद का व्यवस्थाविकरण किया गया। वेद में समृद्धिकरण के लिए B<sub>1</sub>, B<sub>2</sub>, लोह की व्यवस्था

होती है। इस व्यवापी में ड्रम्बुडी क्षमताएँ हैं  
रोज 5 या 6 ब्लाइस खाने से ड्रम्बुडी प्रशंसनकर्ता होती  
है और एवं विषयक उद्देश्य की पूर्ण होती है।

4) सामान लिंग दोनों पाले अन्न का अहल-बहल के  
समृद्धि करना - आचार की पर्यामार्गानीन का  
उपयोग करने के पेशन अन्न करना है। विभागित  
बहल है। उसी पूर्कात् वभद्र कले का उपयोग  
करके पेशन करना चाहिए।

5) अन्न का पूर्ण अन्न में कृपासंकेत करने के लिए  
समृद्धि करना मिटे पदार्थ चाँड़ुलेट, गोलियाँ जैसे  
वापक्कु का समान अधिक होता है। याने कावौष्ठ  
का प्रभाग उत्तर होता है और काढ़ी पेशकु घटकु  
दम होते हैं। जाविरिकु जूँझी बहाने के लिए कावौष्ठ  
के साम-साम यायमीन, बायमीन की आवश्यकता  
होती है। इसलिए मीटे पदार्थ में यीवनसाव डाल  
के समृद्धि करना किया जाता है।

### विभिन्न पदार्थ का समृद्धि करना

1) गोड़ और बाढ़ी पदार्थों का समृद्धि करना-  
गोड़ और बाढ़ी पदार्थ वैज्ञानिक भौतिकी में  
में अविनाशन, रुग्नीज पदार्थ, लाचसीन (निलगिरी)  
मिलाए जाते हैं। योकि गोड़ में लाचसीन का  
होता है सात-सात B<sub>2</sub> भी मिलाये जाते हैं  
प्रक्रिया करने पर यह घटक बढ़त होते हैं  
और इसलिए डाले जाते हैं।

2) आटा और छाले का समृद्धि करना-  
भावत में आटा का उपयोग ज्यादा  
ज्ञान में किया जाता है। सभी भूरों में असू जा  
उपयोग किया जाता है। लेकिन गरीब लोगों जा

स्वास्थ्य सुधारने की हड्डी, जो अर्थात् उत्तम समृद्धि का  
कुरंगे से लाभ होता है अर्थात् में B<sub>1</sub>, B<sub>2</sub>, B<sub>3</sub>, B<sub>6</sub>,  
विटामीन E, क्लूलशीयम् मिलाकर बाया है।  
बल के आर्थ में भी खबरी पहारी और यह  
साप मिलाकर समृद्धि करना किया जाता है।

### 3) चापल का समृद्धिकरण -

चापल का समृद्धिकरण अमेरिका 1975 में  
चापल का समृद्धिकरण किया गया था। इह  
समृद्धिकरण उत्तराहम् से किया है। पहले  
पृष्ठमें B<sub>1</sub>, B<sub>2</sub> और लौह द्रव्य चापल  
को लगाकर एह चापल बाजी के चापल में  
मिलाते हैं।

### 4) नमक का समृद्धिकरण -

वहाँ वाले पहाड़ी प्रदेश में आयोडिन  
की जमी होती है तथा कुछ लावण लोह आयोडिन  
के अभाव से नमक लीमाती होती है। इस विभागी  
में नियन्त्रण में लाने के लिए नमक में आयोडिन  
मिलाकर समृद्धि किया जाता है। याथा नमक  
अशुद्ध होता है। इसलिए उसे दुष्टपरिणाम  
के बावजूद लिए जायें। जिस में आयोडिन मिलाने  
के लिए जागतीकृत आरोग्य संगठनों ने  
स्थिरकर्त्ता की है। इसके बाये में 15-20 लीटरों  
आयोडिन मिलाया जाता है।

### 5) नेल का समृद्धिकरण -

नेल में सिंगारने के नेल में लायन  
मिली आई, यिओनावन डाल तथा समृद्धि करना  
किया जाता है।

(3) अपने कृषि व्यास्त्या?

13. किसी भी समीत प्राणी के द्वारा अक्षयने के बाद उसका पर्यावरण की ओर लाती है जो आपको उसी दृष्टि से देखती है जो उसकी विकास के लिए इसके नियमों को करने की समस्या है ऐसे पर्यावरण को अपने कुछ ही

14) अनुकूलता की व्याख्या ?

Ans:- यहां पर्याप्त होल्ड ऑफिनार्स केन्द्र (ए) आकर्षणीय  
परिवासी जिसने तकनीक से भरा है। अक्षरमध्ये याकेन्द्र  
जो मुख्यी बहुत है बैंकों, शाही बैंक, मानविकी  
सामाजिक और विभिन्न राजनीतिक गुणों आकर्षणीय है।  
याकेन्द्र आकर्षणीय उपचार से है।  
अधिकारी द्वारा दिए गए विभिन्न उपचारों की विवरण नहीं  
दिया जाता है। 1951-52 मालिक राजनीतिक विभिन्न विधायिका  
को द्वारा दिए गए विभिन्न उपचारों की विवरण नहीं  
दिया जाता है। इसके अलावा आकर्षणीय विभिन्न

15) अपेक्षित अनुभव ?

16) पोषण चाने क्या ?

Ans:- पोषण आकर्षण के दृष्टारा प्राप्त होने वाले विषय।  
पोषण मात्र उसके कार्य प्राप्ति के साथान मानवीं  
शरीर के दृष्टारा असुख अस्त्रोग आरोग्य पर होने  
वाला परिणाम इत्यादि का अध्ययन करने पाला  
शारीर चाने पोषणविषय है।

17) प्राप्ति के साधान

Ans:- मानीष पदार्थ - मौस, मट्टन और, यकूम  
वनस्पति पदार्थ - मेल बीज, भोजन, टाल छान्दा,  
शरीर।

18) अंसूवस्त्र विनाशकल की परिक्षाएँ :-

Ans:- जिस विनाश में हाइड्रोजन ज्याहाजो विस  
भट्टी किया जाता है उके अंसूवस्त्र विनाशकल  
कहते हैं।

19) अंसूवस्त्र विनाशकल की परिक्षाएँ :-

Ans:- हाइड्रोजन वो विस करने का त्रैमाण रिक  
विनाशकल में ज्याहा होता है। उके अंसूवस्त्र<sup>म</sup>  
विनाशकल कहते हैं।

20) विनाशकल की परिक्षाएँ :-

Ans:- विनाश पदार्थ में होने वाले अन्त युक्त क्षयित्व  
पदार्थ तो विनाशकल में होते हैं।

21) वास्तविक भोजन कर्मकाल पदार्थ

Ans:- ज्याहाजीव नविक, रसीदीव नविक, पालुविक

## मेटाल्युराल्फार्ड, बोडीबीम कंपनी

२२) जीवनसांप का परिक्रमा लिखो।

Ans:-

जीवनसांप का परिक्रमा



जीवनशास्त्र



जीवनशास्त्र

१) जीवनसांप A<sub>1</sub>, A<sub>2</sub>

२) जीवनसांप B

३) जीवनसांप C<sub>1</sub>, C<sub>2</sub>, C<sub>3</sub>

४) जीवनसांप D

५) जीवनसांप E

B<sub>1</sub>, B<sub>2</sub>, B<sub>3</sub>, B<sub>4</sub>

२३) आवश्यक मिलामल।

Ans:- आवश्यक के माध्यम के शब्दों का ये मिलामल प्राप्त होते हैं। इसे आवश्यक मिलामल कहते हैं।

२४) छोटे प्रयोग और अक्षरों अंकामणि

Ans:- (छोटे प्रयोग वे जिस पद्धति में मिलामल का प्रयोग होता है। इसका उपयोग छोटे प्रयोग के लिए होता है। उसके उपयोग में भाँस, भाँड़, दुध, दुधी जैसे पद्धति, मालवन, छी, दही, पनीर।)

अक्षरों अंकामणि यह प्रयोग कुरम में का व्यापक घोषणा है। आवश्यक मिलामल उभागे से 1-2 मिलामल का प्रयोग कुम्ह घोषणा है। इसकी विधि अक्षरों अंकामणि प्रयोग कहते हैं। उसके उपयोग, क्यांचियरों, कार्डियन्य, मूलत, गोल, बीप्प।

२५) अर्थ का संस्करण :-

Ques: किसी उत्पादक को आहार में सारिन बही है। यह दिया गया विषयित आहार का विश्लेषण होगा। उपर्युक्त उत्पादक के नियन्त्रण का सारी भवित्व है। अमरत्र, मुख-पसीना, ठंडे के द्रव्यावाही के बाइक जूळा घासा है। नम और आहार के द्रव्यावाही का समान होना चाहिए। उपर्युक्त के द्रव्यावाही का समान तो की ज्ञान का आहार कम हुआ हो तब उसे नम का धन लगाना चाहिए है।

Ans) कार्डिनल न्यूक्री अणीव प्रतियो तु जगते गाली उदासा फूर्य प्रकाश के द्रव्यावाही मिलती है। वन्दवपति मे प्रकाश क्षेत्रलेवना की छिया द्रव्यावाही उत्तीर्ण तेयार होते हैं। उदास-① प्रकाशकर्त्त्व, ② हिक्कार्कर्त्त्व, ③ लक्ष्मा कर्त्त्व

① प्रकाशकर्त्त्व - साथे तांत्रिक बुद्धि अठु होता है। उक्ते प्रकाशकर्त्त्व उत्तीर्ण तेयार होते हैं।  
① उत्तीर्ण ② कुट्टीप ③ गोल्डफ्रॉप  
② हिक्कार्कर्त्त्व - दो भाषे या प्रकाशकर्त्त्व उत्तीर्ण तेयार होते हैं। दो अठु मिलकर हिक्कार्कर्त्त्व का दोप्पा तेयार होते हैं।

① अुकोप ② लक्ष्मीप ③ मालतीप  
③ लक्ष्मीप कुदीप - सुकाशकर्त्त्व अर्थ  
विश्वासीप उनके अठु से लक्ष्मीकर्त्त्व  
शक्ति तेयार होता है।

① पितृमय प्रदान ② व्येल्ड्युल्मोप ③ हेमीप्रेल्ड्युल्मोप  
④ उलास्कोपन ⑤ प्रवर्तीन ⑥ डेवास्यूलीन

Ans: किसी व्यक्ति को आहार में तापिन बही होता है।  
किया गया विद्युत आहार का विश्लेषण होगा।  
उससे जियाक द्वारे विवरामण का तारीख भवन होता है। अमरल, भूज-पश्चीम, ठड़क के द्रवावा जैसी  
के लाइब्रेरी पानी है। अत्र ऐसे आहार के  
द्रवावा से किया ज्ञान समान होना चाहिए। आहार  
के द्रवावा ज्ञान का समान वाकी ज्ञान का आहार  
कुम दुआरे जैसे ज्ञान का धन योग्य होना चाहिए।

26) कार्डिट्रु - व्यक्ति जिनप्रतियों को जलाके ताली  
उत्तमता प्रदान करता है। जिलाती है।  
वनक्षेपमि में प्रकाश व्यैष्टिलेवन की क्षेत्र द्रवावा  
उत्तरीज तेयार होते हैं। उक्त - ① मुक्ताकुर्त्तय,  
② हिताकुर्त्तय ③ लक्ष्मीकुर्त्तय

① मुक्ताकुर्त्तय - ज्यादी लाकेव का रुक्त अनु  
होता है। उक्ते मुक्त व्यैष्टिरेय उत्तरीज दुहो है।

① उत्तरीज ② कुव्योप्य ③ गौलेव्युप्य  
② हिताकुर्त्तय - दो ज्यादी या एकलाकुर्त्तय उत्तरीज  
से दो अनु भिन्नकर हिताकुर्त्तय का गोप्य  
तेयार होते हैं।

① उत्तरीज ② लक्ष्मीकुर्त्तय ③ मालंतीज  
③ लक्ष्मीकुर्त्तय कुर्त्तय ④ गुक्ताकुर्त्तय और  
वक्त्राकुर्त्तय नवकुर्त्तय अनु ⑤ लक्ष्मीकुर्त्तय  
क्षाकुर्त्तय तेयार होता है।

① पितृमय पूजार्य ② व्येल्युत्तोप्य ③ हेमीपूल्युत्तोप्य  
④ उलाख्युत्तोप्यन ⑤ पूर्वतीन ⑥ देवतायुद्धीन

## 27) खनीकीवान्त -

Ans:- इसको किवन प्रतिक्रिया कहते हैं। खनीक और कुछ वीवान्त अपने विवात के लिए शाविष्य का उपयोग करते हैं और व्यापिस वह कुसकुस हो जाता है। सुकौप पर खनीक की क्रिया होती काबिन डायओक्साइड वायु और नरिन उपलक्ष्मेश्वर संयार होते हैं, अल्कोहल का कपासबंद होता है।

## 28) अन्नमंस्तुता की परिभाषा ?

Ans:- खाद्यानन में उभयुक्त-वाह में, दंत में पोषणात्मक में बहुम बड़ा परिवर्तन नहीं होगा। इसके लिए आहुमा, उग्नात्मा वातावरण के बहुमध्यिग्राहक विषयम् करके उस खाद्यानन के व्युत्थानम् के अनुभाव वीघकान के लिए या बुराहिम मयी तथा फात के लिए खाद्यपदार्थ कंवालिम करना याने अन्न मंस्तुता है।

## 29) अमृहतिक्षण की परिभाषा ?

Ans:- किसी भी पदार्थ में वैक्सिगिक अवश्यक में उपलक्ष्मा न होने वाले पीषण, घटक (पात्र) का विनियोग याने अन्न पदार्थ का अस्यमृहतिक्षण है।

## 30) रसायनिक पदार्थ।

Ans:- अन्न व्यत्कु, कार्बनिक, प्रोटीन, पानी, विटामिन, लानिय।

## 31) शरीर के पानी का संतुलन।

Ans:- हमारे शरीर में कुल जल का 70%, जल पदार्थ के

मेरी ओरिंग्स को मेरे रहना है, इस ही उत्तराधिकारी के बाबत  
भलग - भलग को ओरिंग्स को मेरे पास जैसे मापा  
भलग - भलग होती है। 50% अपवाहन और अन्य ओरिंग्स  
17%. अपवाहन -) लाइंसेन्स इंडिया, 4%. अपवाहन -  
इंडिया (स्थान), 7% अपवाहन लाइंसेन्स इंडिया

32) पार्टी का कार्य।

Ans:- एल कोरिंग्स को देखकर होने वाली रोकथानिक  
क्रियाओं मेरे घोलक के काप मेरे कार्य का बहार है।  
पल की आपश्शयकासा पात्यन् क्रिया मेरे होती है।  
स्वयं आया अधिकारी इत्या ने भिलकव छोड़िया  
मात्र पहुँचो मेरे है।

33). कुलीरी की परिशाखा।

Ans:- कानिरिक श्रम करने के लिये हमें विकास कार्य  
की आपश्शयकासा होती है उसको कर्म कुहा  
प्पाता है। वह संघर्ष को विकास करकर्म मेरे  
नापते हैं और कुलीरी कुहती है।

34) आधार व्यापार्य की परिशाखा।

Ans:- आधारीय व्यापार्य उत्तराधिकारी इस ही उत्तराधिकारी  
कानिरिक एवं मानसीनु काप से विकास की उत्तराधिकारी  
मेरी है। कापां की आपश्शयकासा कुछ विवरित  
करने मेरी भी कर्म की आपश्शयकासा होती है।  
इसके कापां की आपश्शयकासा का आधारीय व्यापार्य  
कहते हैं।

35) अन्य निलोपह।

Ans:- जिस भौतिक पदार्थ के अधिकृत कप मरा गया के अंसर ले जाना। ऐसी भौतिकता जो है वह मिलावट से कम या बहुत दो घासा है, जो बच्चे हैं एक भौतिक पदार्थ के उपर्युक्त का प्रश्न है कहा जा सकता है ऐसी भौतिक पदार्थ का कप अधिकृत मरा है दिखाए देता उसे अब न मिलावट कहते हैं।

उ३) कुपोषण याने व्या :-

Ans:- भौतिक सभी की अधिकृत मरा कभी होने हमारे शारीर के लिये दायिकार्य है यह होने परिविष्टियाँ इसके बाय तोती हैं अर्थात् कुछ भौतिक सभी अधिकृत कुछ कम से वह कुपोषण कहलाता है।

उ४) संसुलिं आहाव :-

Ans:- शारीर की कार्बोरिक मानकीड़ कर्म तिक्त सफाव की शारीरिक घो पविष्ठा और संसुलिं आहाव लिया जाता है उसके आमान्य आहाव उहो है।

उ५) विनाशान्त्र

Ans:- उलाघटी लिपिड्स, कृक्की लिपिड्स, कठेकांल।

उ६) अ००१ और उपार्थ की परिमाणा बतालाकार उत्तर के कार्य व्याहृत करो।

Ans:- अ००१ :- किसी भी व्याख्यान मानी के दावा अवृत्ति उत्तर के कार्य उत्तर पर्याप्त व्याख्यान होता है शारीर की कठ शारीर की आपूर्यकामा धरी होकर शारीर की तृप्ति और विडास ऐसे ही उन निमीग्नि ग्रने

कानून की हितमाता विवरण में है ऐसे विवरण की भवित्व के बहुत से

अनन्त के कार्य :-

- 1) शाहिरिक कार्य
- 2) मानसीक कार्य
- 3) सामाजिक कार्य
- 4) वर्गज्ञता और धार्मिक कार्य
- 5) शाहिरिक कार्य (इकाइ और जन प्रशिक्षण का जिम्मा (2) देशियों की पुनर्शिक्षण करना)
- 6) कार्य लाली करना या धूमी करना
- 7) विभिन्न जीमियों को शाकीय का व्यवहार करना
- 8) शरीरांति कियाओं का नियंत्रण करना।
- 9) मानसीक कार्य (उपबन को शाकीय की मुख्य भगाई कुम होती है उसी प्रकार मन को कांसी भी खाटम होती है याने पक्संह का छार्च पद्धर्य याने को भिला या आनंद लाने होता है उस कारण उसांह बढ़ाता है) शाकीय की कार्यविमाता लाती है अब यो मन पर होने वाला व्यवहार का परिणाम याने अस्पष्ट वापारण में अवनग्न होने करने पर उस अब ऐ उचित भवान लापन होता है इसका परिणाम याकिस के मानसीक व्यवहय पर होता है।

WHO ने शाहिरिक आरोग्य के व्याय-कार्य मानसीक आरोग्य का पोषण अब एक विश्विहोग है यहां वाया है।

- 10) सामाजिक कार्य अब यह सामाजिक व्यवहा होने का भवान माना जाता है और इसलिए नादी, सूडन, वाल्बिन इत्यादि में शोधन का आमाधन किया जाता है। इसके

ਪੀਂਡੇ ਕੁ ਸਮਝ ਤੇਵੇਂਦੇਖ ਜਹ ਪੰਕਜ ਤੇ ਭਾਗਕੁਮ  
ਕਲਨਾ ਅੱਖੋਂ ਆਸਪਿਤੁ ਪੰਕਜ ਤੇ ਮਾਘੁਮ ਕਲਨਾ ਮੈਦਾਸ  
ਮੇ ਪਟ੍ਰੇਤ ਰਾਫ਼ ਸੇ ਯਾਦ ਸਾਂਚਣਾ ਅਤਕ-ਛੁਕਾ  
ਹੈ। ਤੁਲਾ ਸਾਡੇ ਤੇ ਪਦਮੀ ਬਲੀ, ਦੇਖਾ ਤੇ ਸਿਰਮੁ,  
ਪੰਧਾਰ ਕੀ ਲੱਗਦੀ। ਇਲਮਣੀ ਸਾਡੇ ਮੇ ਤੱਤੇ  
ਛਾਂਹੇ ਧਾਰੇ ਭਾਨ ਯਹ ਆਸਪਿਤੁ ਹੋਵੇਂਦੇ ਭੂਪ-  
ਸਾਂਕਾ ਵਾਲਾ ਫਲਨੇ ਕੁ ਨਾਉਨ ਮਾਨ ਆਇਆ ਹੈ।  
ਕਿਸੀ ਨਿਸ਼ਿਸ਼ ਤੇ ਕਾਰੇ-ਨੇ ਆਵੇਂ ਕੋਨਾਂ ਹਾਥ  
ਖਾਂਦੇ ਕਾ ਬਿਧਾਂਗ ਦਿਖ ਆਇਆ।

ਪਹਲੇ ਤੇ ਤੂਲ ਸੇ ਹਿੱਸੇ ਨੇ ਗੱਲ  
ਓਪਨ ਹੋਵੇ ਤੀ ਪਲਹਿ ਦੀ। ਰੁਕਾਂ ਨਵੀਂ ਕਾ ਕੋਈ  
ਕੋਕਣ ਖਾਂਦੇ ਗੱਲ ਤੇ ਸੱਭੀ ਲੋਗ ਨੂੰ ਆਪ ਦੇਣ  
ਦੇਣੇ ਦੇ ਠੰਢੂਲ ਕੀ ਆਵਨਾ। ਬਿਨਾਂ ਹੋਂਗੀ ਦੀ ਤੌਰ  
ਗੱਲ ਨੇ ਪੰਧਾਲਨ ਬਿਨਾਂ ਹੋਂਗੀ ਦੇ ਪੜ੍ਹੇ ਪ੍ਰਾਨੀਕੁਤਨਾਂ  
ਤੇ ਫੀਲਣ ਦਾ ਪਲਹਿ ਜਾਂਦੇ ਹੋ ਹੋਵੇਂਦੇ ਹੈਂ।  
੨) ਅੰਤਕਾਲਿ ਕੰਤੇ ਪਲ੍ਲੇਤੁ - ਤੁਲਕਾਂ ਤਾਕਿਆਰ ਤੁਲੇ  
ਪ੍ਰ ਪਿਲਾਵ ਤੁਲਾਰ ਤੀ ਰਾਵਾਂ ਪੰਖਹਾਸੀ ਦਿਖਾਵ  
ਦੀ ਹੈ। ਵਿਧਾਰੀ ਤੀ ਆਬਨ-ਤਸ਼ਨ ਦੇਣ ਤੇ ਰੂਪ  
ਕਿਧੂ ਆਮਾਂ ਹੋ ਆਖ ਦੀ ਵਾਕੀ ਪਾਕੇਵਦੇ ਨੇ  
ਆਨੰਦੀ ਪਾਸਾਪੜਾ ਮੁਲੋਕੀ ਪਾਇਸ ਕਲਾਲੂਸ  
ਅਵਲ ਕੂੰ ਵਿਖਣ ਪਚ ਰਾਵਾਂ ਦਿਵ ਹਾਲ ਹੈ।  
ਦ੍ਰਿਵਾਲੇ ਸੇ ਬਾਣੀ ਤੇ ਵਿਸ੍ਤਰ ਦੇਸਾ ਮੇਹਮਾਨ  
ਤੀ ਕੁਗਾ ਆਮਾ ਹੈ। ਲੋਕ-ਗੀ ਦੀ ਆਸਨਾ  
ਪਚਾਦਾ ਮਾਘੁਮ ਹੀਨੀ ਪਾਇਸ ਦਾ ਠੱਕਾਤਾ  
ਤੇ ਵੇਖੇਂਦੇ ਹੋਮਾ ਹੈ।

੩) ਧਾਸਪਿਤੁ ਦੂ ਚਾਕੀਤੁ ਜੀਵਨ ਦੀ ਨਾਨਾ ਵੱਡੀਆਂ  
ਆਗ ਮਾਨ ਆਮਾ ਹੈ। ਅੱਖੋਂ ਚੁਪ੍ਪਿਵ ਹੋਣੇ ਲਈ  
ਤੀ ਪਿਛੇ, ਨੈਪਟਾਂ, ਨਵਿਧਾਵ, ਪੇਤ, ਆਹੋਸਾਹ

जूहे लोगों को प्रत्याहरण करके दिया जाता है खाने में अवन वा फारा यह इत्यादि को व्यांचालिक करके देता है।

४५) अबन गांठ के वर्गीकरण स्थिति युवा पहाड़ी के बारे में समीक्षार लिखो।

प्र॒- मृताधारा → मृताधारा याने एक लाई में लाई सकार की ली होते ओर उभाले अद्वितीय लेली मिलता है। साधारण ये दूसरे भाग में लेकु काआहार मृताधारा ये ३०% से ४०% लेली मिलता है। उससे ६५%, शे ७४% कार्बोफ्लैट है। ६% से १५% स्थिति , १% से ६% विनश्च पहार्य ओर १% से ३% रणनिय दूसरे लेते हैं।

मृताधारा प्राणी का उत्तम साहार है। मृताधारा में प्रमुख अवन लड़े ऐमाने में उकोरोग किया जाता है। मृताधारा में स्थिति का तमांग पैदा ६% से १५% होता हो आहार में मृताधारा में का तमांग उकोरोग होने से आहार में ८०% प्रतिन मृताधारा को मिलता है। आपकल व्यांकिय पहार्य में खोकी से उत्पादन के तमांग में होता है। इससे में सार होनेवाले कलाप लिंकोल्स और लायसीन दु प्रमांग बढ़ता जाता है।

4) जीवनसार अं प्राणी के साथ।

उत्तर: प्राणीय पहार्य से विहनिन ए का प्रमाण संकेत होता है। उत्तर महसूल, अंडे, मधुबियो (उत्तर) बनकपासि पत्तर्य मे हरी अंजियाँ, गांधर, पपर, घाम, तमातर, कुमड़ा, परमाणोगी।

4) वरीषरी =

उत्तर: वरीषरी के सीन इकार है।

(1) वाल वरीषरी (2) शुद्ध वरीषरी (3) आँक वरीषरी

(1) वाल वरीषरी - छोटे दृश्यो को होनेपाला रोग

(1) वाल वरीषरी - जो सीन वाले होते हैं। और असिष्टार होता है। कलटी होती है। भुख उम लगती है।

दृश्य कम प्रमाण ने बहुद कोठसा होती है।

दृश्य चौर ने सुखन आती है। चौरे पर सुखन आती है। अशाल्यपन आता है। दृश्य के कार्य वरीषरी यही खलते उक्त कारण रवासेश्वरास मे कठिनाई आती है। वोग की सीधारा बने पर दृश्यो कु भृत्यु आती है।

दृश्य मे 10 ml ग्रा दिन मे सीन वार कहु है के बारा देवा चाहिए।

2) लम्फ वरीषरी =>

मंडु (दिनार) पर चारणम होता है।

अस्त ज्ञे लगती है। पदाने क्षेत्रो पर परिणाम होता है। व्यंगोद्य दाढ़ता नहीं होता है। हृथ,

पैरो के चाही लगती है। मांडी दृश्यी है।

इस करण मांसपेशी कर्मजोर होती है।

दृश्यो का लमाण लेने पर खलना चिरा होता है। (भास्तिल) पर परिणाम होता है।

कोमा में जाता है। कमते भंग लेता है।

3) आई - बोरीबरी  $\Rightarrow$  बोरीबरी लहान के आतिरिक्त अथवा लहान का समतेला होता है। पर्याणी शरीर पर सूखन आती है और हल्दी का अल्पार उत्तर के अस पारा हल्दी का कार्य ठिक नहीं चलता अस कारण व्हासोरेत्रस में काटिनडि आती है। इस कारण व्हासोरेत्रस में गुहा बार हल्दी की गति छोटी होती है और व्यावर्त छोटल्य आती है।

4) मुड़दुस्य  $\Rightarrow$  5 वर्ष के बाटी की होने वाला खेड़ है। यह  $\Rightarrow$  उस पर्स बर्ती के खेड़ श्वर्य तकार बदरावर पहुंच नहीं सकता अस कारण कर्स रोग औ एमाग ज्यादा होता है। कंभजिकीकृतान की क्षिरा बरावर नहीं होती अस कारण हड्डी कुँड बनती है। क्षिरों के लिए असमय होता है गधे औ आकार बढ़ा व शोषण दिक्षित और सोंसे का अप्पार बढ़ा दिखता है। होटे लिंगों के स्थान बढ़ते भरती नहीं। दूत मान की कृष्णा में होती है। बट्टी दिखती है। निर ऊर्ध्वानी होती है।

44) आतिरिक्त होनावे व्यावर्त की आकार तालिका +

# एक दिन की आहार वालिका

समय	पदार्थ	प्रमाण
सुबह 6 बजे	हल्दी, चाय	1 कप
8.30 बजे	खीर केला	1 कुत्तोरी 1
10 बजे	सौंदर का रस	1 कप
12.30 बजे	उभर दखला पानी आंव और आटा की शोटी, नरम छात दही बोक्की की सब्जी	2 कुत्तोरी 1 1 कुत्तोरी 1 कुत्तोरी
2 बजे	ताज	1 कप
3.30 बजे	हल्दी चाय चिक्की	1 कप 2
6 बजे	चिमके निकासिर पक्कारा स्येष	महशम नाफार
10 बजे	डूँगी	2 ली
अंत ता साठा	सेवर (सैफर) बम्बन गातडण्डी	1 कुत्तोरी

- Q45) विद्यामिन 'ज्ञ' के जनी के परिणाम।
- Ans. 1) जीवनसत्त्व 'ज्ञ' के अभाव से 'आसी' में सूखबी होती है। जिस कारण 'आसी' की गंदिय जलधीर होती है।
- 2) लाभ के समय कम दिखता।
- 3) उत्तरार्द्ध वास्तुशास्त्र में गंदक तथा शंख में देखने पर छाइगह होती है।
- 4) आर-बार जलकी जनी होती है तो 'आसी' के पारदर्शक पहल रूपों होती है।
- 5) उस फारण सफेद रंग का साकृत के चेष्टे के ब्यान वर्षिक वर्षिक त्रैष्ट्र पारदर्शक पहल पर दिखते हैं।
- 6) उसे विटोट करे करते हैं।
- 7) जीव के कारण शुद्धि रूपों होती की सम्भावना होती है।
- 8) रोग वृत्तिकारक व्याकृति, कम होने के कारण उसके कारण संस्पर्श होने की संभावना जल्दी होती है।
- उपर => ज्ञासी, सदी।

- Q46) वृक्षाशय के कारण।
- Ans. मानवीय बालक, गर्भिती वशी, कुमावणिया के जड़कियाँ नहीं ४५% वृक्षाशय राह जौह के जनी ये होता है। ब्यास आहार में जौह उभाव हुआ से बालक में वृक्षाशय का प्रमाण उत्तम है। यह कृपीषण में दास्तक होता है। गंदी को गर्भितवरा में जौह की उभी कुजाहो घातम से बालक का वर्णन आपृष्ठकरण त्रैष्ट्र।

कमी होता है) उन्हीं प्रकार वर्णनशुण्य यह मानव  
की समुद्र व्यवस्था है)

47) पेलाग्न ।

Ans: दो लीमार लालकु मे शिविकु व मानवीकु  
लीमार जिमली होता है। अधिकारीन के अभाव वजे  
पेलाग्न लीमार लालकु यिक धुमने लगता है। इस  
लीमार के अधिकार , दुहरी ते रात के विकार  
होता है। व वालकु की बोगतसिकारु वालती कुम  
होती है। वजन लम होता , मानवीकु दुबिलता रह  
लगता दिखता है। ये भाग मे ज्वाकी व मख्ता दो  
प्रमुख अन्न है उस पराए मे नियासीन की कमी  
होती है। महाप्रदेश) मे लेंयविकारु राह लीमारी  
कुमी होती है। लामे मृत्यु की कमी होती है वर  
कुम होता है।

48) आचाहीकु परीक्षाम लवनेवाले व्याप्ति के केंद्री  
कुमी भाँग।

Ans: 2200 ते 2300

49) लौहार के प्राप्ति के राशन।

Ans: उड़ान , लौगान , पाटोदार १५/१६५ , ०३५ ,  
सुख्ता मेवा , चट्ठुर ।

50) सुख्ता

Ans: १५/१८ तरफ के उड़ान को यह बोग होता है।  
सुख्ता की वृद्धी कुम होती है। ओर तरफ की अपेक्षा  
कुम दिखता है। अकाल लिखता है। वर्षा दिखता

पिंड करते हैं, उदाहरण आगे निम्नलिखित होता है।  
सबसे पहले ऐसे में जुधान आती हैं  
जो इनके बाद शर्क-वर्गीय प्रक्रम अनुभाव  
पैदा हो जाते हैं जिसे निम्न छोटी दृश्यान्वयन  
पैदा करते हैं जो उनका वह लक्षण है। आगे इनका प्रवर्तन एवं  
उन्निवेशों आती है। प्रते लक्षण में उन्निवेशों हैं।  
जो भी इनका जाति रूप होता है,  
जहाँसे होने की संभाषणा होती है तथा उन  
विशेष नियमों के समान दृश्यान्वयन है। इनका पूरा  
दृश्य योगी है। इनका यह योग्यता होती है।  
यहाँ की आकार उदाहरण है। नोगृष्टप्रकाशक जाति  
रूप होती है।

### 5) व्यापार्यपत्र के नियम

नियम:- व्यापार्यपत्र का नाम नहीं है लेपन की कमी से  
है इसके असितिविम और भी नाम है जो नियम है।

1) व्यवस्था की हालिये घोषणा :- लक्षण में व्यवस्था की हालिये के  
साथ उकायी होती है।

2) किनपी दुर्घटना, शोष, आपरेशन आदि के समय  
लक्षण से अद्वितीय व्यवस्था देते हैं।

3) प्रत्येक व्यवस्था के समय अद्वितीय व्यवस्था

लक्षण में लेते हैं जिसका उपर्युक्त नहीं होता।

4) शहर आमदारी से अन्य द्वारा दृश्यता रूप होता है।

5) वाह-वाह दायविद्या होने के कानून अनिवार्य लक्षण  
का लक्षण नहीं हो पाता है।

6) अपने लक्षण लक्षण की दृश्यता है।

7) अन्धावाहक्या से लेकर कोई दृश्यता के असितिविम

पहारी पहारी ने देने की जलोहलपत्र की तुम्ही होयाई है लेकिं इस में जोहलपत्र होसा जही है व्यापक इस में जोहलपत्र होगा जही है अब आपरा पहारी उसे मिलने जही है।

3) मार्गित दास में आदिक उव्वतभाव हो याएँ औ उसकी छाती हेतु आहार में आमिकिला लोह, लवल जही लिया याएँ है।

3) नामांकित्या यारा शाषीवस्त्या में आमिकिला आकर्षण लोह लोह लवल की तुम्ही न होना।

4) आहार में ट्रोटिन की तुम्ही का होना। काल वर्ण कांडे के निमंगि के कार्य ट्रोटिन आकर्षण होना है। लक्ष्य के न्याय गांवा पीभ अस्पृश आवश्यकता होना। डोलिंग अमृत लोह की आवश्यकता होती है। हन से बड़ी कमी से नई लाल केचुप कुरिशाओं का निमंगि जही हो पाएँ।

### दृढ़ीकरण

5.2) दृढ़ीकरण)

प्रश्न कोई भी अब उपर्युक्त दात्य नहीं मिलते हैं भासत्तव खाद्य पहारी को दृढ़ीकरण कहो है।

### धरी

5.3) दृढ़ीभवन)

प्रश्न लिनाहा पहारी दान रियासि के दृव्य रियासि होनेताले विशिष्ट सापमान होते हैं। यिसको दृढ़ीभवन लिंग कहा जाता है। उसमें दृव्य दान रियासि से अपासरण करके हास्त्रीण के ऊपर उसमें भिन्नता याएँ है।

54) उत्तर लनमुक्त्य।

प्राप्ति होती है।

Ans:- अब ये कारीब को नियंत्रण की कारीब ही किया जाएगा उत्तरलन मुक्त्य होती है।

55) कुलरी की परिमाण।

Ans:- एक किलो ग्राम पानी का ३६०० तामान समझ  
जलांधर से बढ़ने से ये ३७०० तामान बढ़ती है। इसे कुलरी कहते हैं।

56) पाश्चात्यरसेशन की किंवद्धि परिमाण।

Ans:- दृष्टि में होनेवाले पाश्चात्यरसेशन इस क्रिया से पर्याप्त के अरीब अरीब १९९.८८ घुड़ी का बाहर होता है और लुई पाश्चात्यरसेशन की खोखे की इस ही पाश्चात्यरसेशन कहते हैं।

57) हृदीकरण।

किसी भी पर्याप्त में अनु धातु की कुमी इसे से उत्पन्न हो जिलाना शाने हृदीकरण है।

Ans:- द्रेड में अभीरमिलान, बम्बु में आयोडिन मिलान।

58) जीवनसाधन दु बायो के साधन।

Ans:- जीवन, जीव जीवनसाधन दु बायो का उत्तम साधन माना जाता है। असिरिया जमिनाले और खट्टे पदार्थ में विटामिन C होता है, जिसका,

कुच्छियाम्, हे दमातर, मौसी की आवश्यकता  
कुद्धान्धा में जीपनासार व नियार थाए हो।  
जो कुड्डि में विटामिन दहाना होता है तो कुड्डि  
कुड्डि में विटामिन देखी लो।

### 59) आरोग्य-

Ans:- ५८८ ( वल्ड हेल्स ऑर्गाइजेशन ) में  
आरोग्य की परिभाषा निम्न तृष्णा से की है।  
आरोग्य यानि रोग से मुक्ति नहीं है बल्कि  
शारीरिक, मानसिक, सामूहिक और  
प्रौद्योगिक अवस्था यानि आरोग्य है।

### 60) संसुलिम आहार -

Ans:- संसुलिम आहार लक्षण अर्थ वाकी में  
आपश्चराङ्ग पोषक वात उक्त व्यवसी के परा  
जुखाव, शाकीव वगव्य जुखाव, कार्यालयाव  
प्राण ओरोग्लिक परिविहासी के शावें कुम्हार  
होना छोटा माझ प्रभाव में होना आहार  
में, कमी काल विषी में शाकीव वी घोड़ा का  
अविद्य में उपयोग करना उसक्षयक होना  
ही आहार में संसुलिम आहार कहा  
लागता है।

61) अस्त्रियानुदान विटामिन D के लाभ यह,

विकर दोनों ही डिप्टी शोले को कुड्डस होना  
है। स्याहियावगम दूधों को घोड़ा प्रभाव  
में होता है। जरनी ब्ल्यूटी को प्रूचण  
प्रायिक फैस समस्या विनाशक होता है।

- प्र० लितागिन ८ के उत्तर में होता है।  
 इसका वितागिन ८ का उत्तर लिता-गिन  
 के निचे V, P जिसकी होती नहीं तो  
 पारग उलरियारु, कार्कुलोरु उपतरियारु  
 पद्मांशु का लिता नहीं तो उपतरिया  
 को बाढ़ आता है।
- 1) हाय, पर, कहे उत्तर है।  
 2) अलाहु समय मुक्तिकृष्ण होती है।  
 3) अल्पी चक्षन आता है।

प्र० अधिवनस्तव, विश्वामित्र गरजे अधिवनस्तव  
 विषयों पर सुविस्तार लिखो । 14

अनसंरक्षण पहुँचति बताएर चार पहुँचति  
 पर यथा गरी।

प्र० ~~उत्तर~~ का अन वेषण दूरी सुधारे  
 दी पहुँचति सुविस्तार लिखो । 14

100वा।

✓ आहरपीषण उद्देश्य अता १०२ ग्रन्थ ७  
 कारण बताएर द्वय दिवस का आवर  
 तात्त्विक गरी।

प्र० एटिपाट ३½ 14

(i) प्रथिन-७ त्रयि ✓

(ii) शुभ्रपूषण ✓

(iii) बुरावरी  
 कलरीमीदर में वर्षा ०१.५ ग्रन्थ के घटना

किंवा

पुलाव्यमाणी आहार मे महत्व  
कौरवायम कार्य — निमित्ता निषेद्धा  
रुक्काकृत्या काळी हात्तेमी  
आधार चयापचये रुक्काजा

प्र०५ टिपा १४

— रक्ताक्षय  
— समुद्रपाता काठनाईया  
— नाहाचे संतुलन  
— अरार मे पानी गानाशी व सीती

मधुमेह कारबो व नक्काशी

पुलाव्य

आयोडीन

अनाचा गर्या

प्र०५ असाकाश लिख. १४

आवश्यक शैक्षामल

लूट पात्रु ल साधन

काळ्या ऊळीशा

नेबुद्धीकूरण

सूर्य एथि न

अनामीसन